महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति

"हम लोग ऐसे तूफानी दिनों के बीच से गुजर रहे हैं, जब रूस का इतिहास वामन डग भरते हुए आगे बढ़ रहा है, कभी-कभी प्रत्येक वर्ष का अर्थ दशकों की शान्तिपूर्ण अवधियों के अर्थ से ज्यादा महान होता है। सुधारोत्तर युग (1861 के सुधार के बाद का युग-सम्पादक) की आधी शती के परिणामों का लेखा-जोखा लिया जा रहा है तथा ऐसी सामाजिक और राजनीतिक इमारतों की नींव रखी जा रही है, जो आने वाले नाना-नाना वर्षों के लिए पूरे देश का भाग्य निर्धारित करेंगी। क्रांतिकारी आंदोलन आश्चर्यजनक द्रुतगति से बढ़ता जा रहा है ... ..." (लेनिन, 'क्रांतिकारी दुस्साहसिकता', खण्ड 2, पेज 266, संकलित रचनायें, दस खण्डों में)

1902 में 'इस्क्रा' के अंक 23 में लिखे लेनिन के इन शब्दों में रूस के भावी इतिहास की झलक साफ दिखायी देती है। रूस का इतिहास वामन डग से आगे बढ़ता हुआ वहां पहुंच गया जहां पूरी बीसवीं सदी रूस (बाद में सोवियत संघ) के इर्द-गिर्द ही घूमती रही। महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति ने न केवल रूस बल्कि पूरे विश्व इतिहास में सर्वहारा वर्ग की महान भूमिका को स्थापित कर दिया।

रूस तूफानी दिनों से गुजरते हुए कैसे समाजवादी क्रांति की मंजिल पर पहुंचा, इसी का आगे वर्णन है।

I
असफल क्रांति से सफल क्रांतियों की ओर

उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दो दशकों में, रूस में तीन क्रांतियां क्रमशः 1905-1907, फरवरी 1917 और अक्टूबर 1917 में घटी। जहां पहली क्रांति असफल रही वहीं दो क्रांतियों ने अपने अभीष्ट को हासिल किया। पहली दो क्रांतियां, 1905-07 व फरवरी 1917 की क्रांतियां, अपने चरित्र में बुर्जुआ जनवादी थीं जबकि अक्टूबर 1917 की क्रांति अपने चरित्र में समाजवादी। चरित्र में इस भिन्नता के बावजूद इन क्रांतियों का सबसे जुझारू व अगुवा वर्ग रूस का सर्वहारा वर्ग था। सर्वहारा वर्ग की पहलकदमी और नेतृत्व के लिए बुर्जुआ वर्ग से तीखा संघर्ष रूस की क्रांति को पूर्व की बुर्जुआ जनवादी क्रांतियों से एकदम भिन्न बना देता है। रूस की बुर्जुआ जनवादी क्रांतियों ने स्थापित कर दिया था कि रूस का सर्वहारा वर्ग इतना विकसित, परिपक्व और क्रांतिकारी नेतृत्व देने में सक्षम है कि वह शीघ्र ही समाजवादी क्रांति कर रूस में सर्वहारा का अधिनायकत्व कायम कर सकता है। और इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए उसके पास क्रांतिकारी संघर्षों से निकली, अपनी पार्टी, बोल्शेविक पार्टी थी। सर्वहारा वर्ग के पास एक ऐसी पार्टी थी जो पहले कभी देखी व सुनी नहीं गयी। इन अर्थों में रूस में क्रांति, सर्वहारा वर्ग और बोल्शेविक पार्टी का इतिहास एक हो जाता है। जिसकी भी चर्चा की जायेगी वह स्वाभाविक तौर पर अन्यों की चर्चा बन जायेगी।

1905-07 की असफल क्रांति ने बाद की सफल क्रांतियों के लिए न केवल पूर्व पीठिका का काम किया बल्कि एक तरह से पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) करवा दिया था। सर्वहारा वर्ग के भावी शासन का रूप बनी सोवियतों का जन्म 1905-07 की असफल क्रांति के दौरान ही हुआ था। सर्वहारा वर्ग ने इस दौरान ही यह भी सीख लिया था कि कैसे जार की निरंकुश शक्ति, उसकी फौज का मुकाबला किया जा सकता है।

1905-07 की असफल क्रांति से सभी वर्गों ने अपने-अपने निष्कर्ष निकाले थे परन्तु सर्वहारा वर्ग ने अपनी पार्टी के नेतृत्व में सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला था कि हार को कैसे जीत में बदला जा सकता है। इसके विपरीत जारशाही और बुर्जुआ वर्ग तिकड़में भिड़ा कर अपने शासन को बनाये रखने की ही जुगत लगाता रहा था। सर्वहारा वर्ग ने अपनी पार्टी और उसके नेता लेनिन के कुशल नेतृत्व में सही वैज्ञानिक निष्कर्ष निकाले और इसके उलट क्रांतियों के निशाने पर रहे वर्ग ने सारसंग्रहवादी मूर्खतापूर्ण अवस्थितियां ग्रहण की। सर्वहारा वर्ग के उत्थान और शोषक वर्ग के पतन की बुनियाद 1905-07 में ही पड़ गयी थी।

फरवरी, 1917 व अक्टूबर, 1917 की क्रांतियों के घटनाक्रम पर चर्चा करने से पहले उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा कर ली जाय जिसमें ये क्रांतियां घटी।

II
फरवरी क्रांति से पूर्व रूस

रूस में पूंजीवाद का विकास और नये वर्गों का उदय

रूस में पूंजीवाद का विकास उन्नीसवीं सदी के मध्य के बाद ही अपेक्षाकृत तेजी से हुआ। उसके पहले रूस में मिलें और कारखाने नाममात्र के ही थे। जारशाही ऐसी रियासतों पर मूलतः निर्भर थी जिनमें भूदास प्रथा लागू थी। इस प्रथा के रहते उन्नीसवीं सदी

के मध्य तक भी रूस में पूंजीवाद का विकास नहीं हो सका था। भूदास प्रथा के चलते उत्पादन का स्तर अत्यन्त निम्न था और रूस में इस प्रथा के खिलाफ किसानों के विद्रोह उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक से ही पनपने लगे थे।

क्रीमिया की लड़ाई (1854-1856) में जारशाही को हार का मुंह देखना पड़ा था। इस हार व जमींदारों के खिलाफ किसानों के विद्रोह ने जारशाही को मजबूर कर दिया कि वह भूदास प्रथा का खात्मा करे। 1861 में भूदास प्रथा का खात्मा कर दिया गया परन्तु किसानों का दमन व शोषण जारी रहा। जमींदारों ने किसानों को 'मुक्ति' के नाम पर हर तरह से लूटा। मुक्ति के नाम पर धन वसूलने, अच्छी जमींनें जमींदारों द्वारा अपने पास रखने, लगान, बेगार आदि के कारण भूदास प्रथा खत्म होने के बाद भी किसानों की हालत में खास फर्क नहीं पड़ा। किसानों की तबाही-बर्बादी जारी रही। यह स्थिति कमोबेश अक्टूबर क्रांति के पूर्व तक बनी रही। 1905-07 की असफल क्रांति के बाद जारशाही द्वारा कृषि क्षेत्र में किये गये सुधारों ने किसानों की हालत को और बदतर किया। वर्गीय ध्रुवीकरण को तीव्र किया। स्तोलिपिन सुधारों (1906) के फलस्वरूप जहां गरीब किसानों के हाथों से उनकी जमीन चली गयी वहीं कुलकों (धनी किसानों) के खेत बढ़ते चले गये। स्तोलिपिन के सामूहिक भूमि अधिकार की व्यवस्था तोड़ देने से 1906-'15 के नौ वर्षों में बीस लाख से अधिक परिवार कम्यूनों से अलग हो गये।

1905 में रूस में 30,000 सबसे बड़े भू स्वामियों के पास 7 करोड़ देस्तेनिया (1 देस्तेनिया = 1.09 हेक्टेयर) जमीन थी जबकि 1 करोड़ पांच लाख परिवारों (जो कि 1913 में 10.9 करोड़ से अधिक की आबादी बनती थी) के पास मात्र 7.5 करोड़ देस्तेनिया जमीन थी। जहां बड़े भूस्वामियों के पास औसतन 2300 देस्तेनिया जमीन थी वहीं आधे से अधिक किसान परिवारों के पास महज एक से दो देस्तेनिया जमीन थी। 1917 में तीस फीसदी किसानों के पास कोई घोड़ा नहीं था, 34 फीसदी के पास खेती के कोई उपकरण नहीं थे। (स्रोत-ग्रेट सोवियत इन्साइक्लोपीडिया, पेज 321, vol-4)

"किसानों की मुक्ति के दौरान में, जमींदारों ने किसानों से उनकी जमीन लूट ली थी। अब कुलक कम्यूनों से उनकी जमीन लूटने लगे। वे सबसे अच्छी जमीन पाने लगे और कम कीमत पर गरीब किसानों के हिस्से खरीदने लगे।

"जार सरकार ने जमीन खरीदने के लिए और अपने खेत सुसज्जित करने के लिए कुलकों को भारी रकमें उधार दी। स्तोलिपिन चाहता था कि कुलक छोटे जमींदार बन जायें, निरंकुश जारशाही के वफादार समर्थक बन जायें।

"1906 -'15 तक, नौ वर्षों में ही बीस लाख से ऊपर कुटुम्ब कम्यूनों से अलग हुए।

"जिन किसानों के पास जमीन के छोटे हिस्से आये थे, उनकी और गरीब किसानों की हालत स्तोलिपिन की नीति के फलस्वरूप पहले से भी बदतर हो गयी। किसानों में अलगाव की प्रक्रिया स्पष्ट दिखाई देने लगी। किसान कुलकों से टक्कर लेने लगे।

"इसके साथ ही, किसानों ने अनुभव किया कि वे रियासती जमीन पर तब तक कब्जा न पायेंगे जब तक कि जार सरकार, जमींदारों और कॉन्स्टीट्यूशनल डेमोक्रेटों (कैडेट-सम्पादक) की राज्य दूमा बनी रहेगी।

"जिस समय बड़ी तादाद में कुलक फार्म बन रहे थे, उस समय (1907-'09) किसान आंदोलन मंद पड़ने लगा था। लेकिन तुरंत बाद ही, 1910, 1911 में और उसके बाद गांव के कम्यून के सदस्यों और कुलकों के टक्करों की वजह से जमींदारों और कुलकों के खिलाफ किसान आंदोलन की तेजी बढ़ गयी।" (सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, पेज 115, कामगार प्रकाशन, दिल्ली)

रूस में औद्योगिक विकास भूदास प्रथा के खात्मे के बाद ही हुआ। इसमें वास्तव में तेजी 25 वर्ष बाद ही आनी शुरू हुयी। पहले विश्व युद्ध तक रूस के उद्योग मूलतः चार औद्योगिक क्षेत्रों मास्को, सेंट पीटर्सबर्ग, दोन बेसिन और यूराल में केन्द्रित थे।

रूस खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों में धनी था। कृषि का विशाल क्षेत्र मौजूद था। कोयला, लोहा, तेल, मैंगनीज आदि के उसके पास विशाल भंडार मौजूद थे। रेलों के विकास के कारण धातुओं की मांग के साथ-साथ कोयला और तेल की मांग भी बढ़ती गयी। धातुओं और ईंधन उद्योगों के विकास में रेलों का बड़ा योगदान था।

1881 से 1894 के बीच रेल मार्गों में 40 फीसदी की वृद्धि हुयी। 1895 से 1905 के बीच रेल मार्गों की लम्बाई दो गुनी हो गयी।

उद्योगों के विकास के साथ आधुनिक औद्योगिक सर्वहारा की तादाद में तेजी से वृद्धि हुयी।

"1890 के बाद, बड़े पैमाने के पूंजीवादी उद्योग धंधे और तेजी के साथ विकसित होने लगे। दस साल के बाद, रूस के पचास यूरोपीय सूबों में ही बड़ी मिलों और कारखानों में, खानों और रेलों में काम करने वाले मजदूरों की संख्या 22,07,000 और समूचे रूस में इनकी संख्या 27,92,000 हो गयी।" (सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास पेज 5)

1890 का दशक तेजी का था। इसमें वार्षिक विकास दर 8% तक पहुंची। हर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की तरह रूस में तेजी और मंदी के दौर आये। 1900 में आई मंदी कई वर्षों तक रही। 1905 के बाद तेजी का दौर आया। 1905 से 1914 के बीच औसत विकास दर 6% रही।

रूस के पूंजीपति वर्ग के चरित्र और आकार के बारे में 'ग्रेट सोवियत इन्साइक्लोपीडिया' कहता है,

" रूसी बुर्जुआ ने न केवल केन्द्रीय बल्कि औपनिवेशिक इलाकों में शोषण के दोनों ही तरीके पुराने सामन्ती-भूदास तरीके और अत्यधिक नग्न (flagrant) नये पूंजीवादी शोषण के तरीके को अपनाया।" (पेज 64, vol-4)

और आगे,

"लेनिन की गणना के अनुसार 1897 में बड़े पूंजीपति वर्ग (अपने पारिवारिक जनों के साथ संख्या) करीब पन्द्रह लाख तथा समृद्ध निम्न पूंजीपति वर्ग की संख्या शहरी क्षेत्रों में करीब 22 लाख थी। प्रथम विश्व युद्ध (1914-'18) के मौके पर स्थिर (fixed) और कार्यशील (working) पूंजी (रिजर्व) की मात्रा उद्योग और व्यापार में 8 अरब रूबल और शहरी इमारतों (आवासीय, वाणिज्यिक और अन्य) के रूप में 7 अरब रूबल के मूल्य की थी 1913 तक 4000 बड़े औद्योगिक उपक्रम थे और ऐसे मध्यवर्ती उपक्रम जिनमें 200 से ज्यादा मजदूर काम करते थे 22,000 थे ओर 16 से ज्यादा मजदूरों के काम करने वाले और घरेलू-कुटीर व्यापारिक संस्थान 150,000 थे। ... ... दूसरी तरफ विशाल पैमाने के उपक्रमों में उद्योग में कार्यरत 85 फीसदी पूंजी लगी हुई थी।" ... ... (पेज 64, vol-4, ग्रेट सोवियत इन्साइक्लोपीडिया, अनुवाद हमारा)

रूस के पूंजीवाद की गति वैसी ही थी जैसे विश्व पूंजीवाद की थी। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारम्भ में वहां कई एकाधिकारी घराने जन्म ले चुके थे। इन घरानों में प्रोडामेट (Prodamet) टूर्बोप्रोडाझा (Turboprodazha), प्रोडूगोल (Produgol) और प्रोडवेगॉन (Prodvagon) प्रमुख थे। प्रथम विश्व युद्ध के पहले रूस में 150 एकाधिकारी घराने सक्रिय थे और रूस के सभी बुनियादी उद्योगों को नियंत्रित करते थे।

"प्रोडामेट 30 प्रमुख धातु निर्माण उपक्रमों और ज्वाइंट स्टाक कंपनियों के विलय से बना था जो कि देश में धातु निर्माण क्षेत्र में निवेशित 70 फीसदी पूंजी का मालिक था और देश के 80 फीसदी धातु उत्पादन के लिए जिम्मेदार था। रेलवेमैन्स यूनियन जिसकी स्थापना 1880 के दशक के शुरुआत में हुयी थी कुल रेल उत्पादन के 75 फीसदी को करता था। प्रोडोवेगान सिंडिकेट का रेल कारों के उत्पादन में लगभग पूर्ण नियंत्रण था। प्रोडूगोल (Produgol) सिंडिकेट का रूस के 70 फीसदी कोयले की बिक्री पर कब्जा था। ... ... चीनी उत्पादन करने वाला सिंडिकेट 90 फीसदी चीनी उत्पादन को नियंत्रित करता था ... ... पहले विश्व युद्ध के समय लगभग 900 नयी स्टाक कंपनियां अस्तित्व में आ चुकी थीं जिनकी पूंजी सम्पदा 1.6 अरब रूबल से भी अधिक थी। ... ... औद्योगिक एकाधिकारी घरानों के साथ प्रमुख बैंकिंग एसोसिएशन अस्तित्व में आ चुके थे। इसमें रूसो-एसियाटिक (Russo-Asiatic Bank), सेंट पीटर्सबर्ग इण्टरनेशनल कमर्शियल बैंक और एजोव-दोन बैंक (Azo-Don Bank) प्रमुख थे। बैंकिंग पूंजी का अस्सी फीसदी तक 12 विशालतम बैंकों के हाथों में केन्द्रित था। ... ... " (पेज 320, वही)

रूसी पूंजीवाद की अन्य विशेषता यह थी कि सर्वहारा आबादी का बड़ा हिस्सा बड़े उद्योगों में कार्यरत था।

"पूंजीवादी उद्योग-धंधों के प्रसार के साथ, सर्वहारा वर्ग की तेजी से बढ़ती हुई। उद्योग-धंधों के विकास की एक अपनी विशेषता यह थी कि विशाल और भारी-भरकम कारखानों में पैदावार और भी केन्द्रित हो गयी। 1901 में, बड़े कारखानों में, जिनमें 500 या उससे ऊपर मजदूर काम करते थे, कुल मजदूरों के 46.7 फीसदी लोग काम करते थे, लेकिन 1910 में यह तादाद बढ़कर 54 फीसदी हो गयी, यानी कुल मजदूरों में आधे से ज्यादा बड़े कारखानों में काम करते थे। उद्योग-धंधों में इस तरह का केन्द्रीयकरण अभूतपूर्व था। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे आगे बढ़े हुए देश में भी कुल मजदूरों की सिर्फ एक-तिहाई तादाद उस समय बड़े कारखानों में काम करती थी।" (सो.सं. की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, पेज 174, वही)

रूसी पूंजीवाद की एक अन्य विशेषता उसकी विदेशी पूंजी पर व्यापक निर्भरता थी। रूस के कच्चा लोहा उद्योग का 2/3 तथा कोयला उद्योग का 1/2 फ्रांस के स्वामित्व में था। जर्मनी का रासायनिक व बिजली उद्योग पर प्रभुत्व था तो तेल उद्योग में भारी मात्रा में ब्रिटिश पूंजी लगी थी। इसकी शुरुआत उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में हो गयी थी। 1880 में रूस के उद्योगों में विदेशी पूंजी 1000 लाख रूबल थी जो कि 1890 में बढ़कर 2000 लाख रूबल हो गयी। 1890 में कुल पूंजी नियोजन 9000 लाख रूबल ही था। 1916-17 आते-आते यह विदेशी पूंजी ढाई अरब रूबल हो गयी थी जो कि कुल पूंजी के तीसरे भाग के बराबर थी।

इसी बात की चर्चा करते हुए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास बताता है कि प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस और ब्रिटेन के साथ रूस के शामिल होने की एक प्रमुख वजह यह भी थी :

"रूस मित्र राष्ट्रों के त्रिगुट की तरफ से, फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन की तरफ से युद्ध में शामिल हुआ। यह कोई आकस्मिक बात नहीं थी। यह ध्यान रखना चाहिए कि 1914 के पहले रूसी उद्योग धंधों की सबसे महत्वपूर्ण शाखायें विदेशी पूंजीपतियों के हाथों में थी, खास तौर से फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन और बेल्जियम यानी मित्र देशों के हाथों में थी। रूस के सबसे महत्वपूर्ण धातु के कारखाने फ्रांस के पूंजीपतियों के हाथ में थे। कुल मिलाकर, लगभग तीन चौथाई (72 फीसदी) धातु के उद्योग धंधे विदेशी पूंजी पर निर्भर थे। यही बात दोनयेत्स प्रदेश के कोयले के उद्योग धंधों के बारे में भी सच थी। अंग्रेजी और फ्रांसीसी पूंजी के पास जो तेल के स्रोत थे, उनसे देश की लगभग आधी तेल की पैदावार थी। रूसी उद्योग धंधों से मुनाफे का काफी हिस्सा विदेशी बैंकों में, मुख्य रूप से अंग्रेजी और फ्रांसीसी बैंकों में चला जाता था। इन सब कारणों से, और इनके सिवा जार ने फ्रांस और ब्रिटेन से जो लाखों और करोड़ों रुपये उधार लिए थे, उससे जारशाही ब्रिटिश और फ्रांसीसी साम्राज्यवाद से बंधी हुई थी और रूस इन देशों को खिराज देने वाला अर्द्ध उपनिवेश बन गया था।

"रूसी पूंजीपति अपनी दशा सुधारने के ख्याल से युद्ध में शामिल हुए थे। वे चाहते थे कि नये बाजारों पर कब्जा करें, लड़ाई के ठेकों से भारी मुनाफा कमायें और साथ ही युद्ध की परिस्थिति से ज्यादा फायदा उठाकर क्रांतिकारी आंदोलन को कुचल दें।"

(पृष्ठ 191-192, वही)

भूदास प्रथा के समाप्त किये जाने तथा अन्य सुधारों के कारण रूस में पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के अलावा एक अन्य वर्ग-निम्न पूंजीपति वर्ग का भी पूंजीवाद के साथ-साथ विकास हुआ। 'स्थानीय प्रशासनिक सुधार' (1858-1864), न्याय प्रणाली में सुधार (1864), शिक्षा के प्रसार आदि कारणों से शिक्षकों, कर्मचारियों, इन्जीनियर, डॉक्टर, व्यापारी आदि से यह वर्ग बना हुआ था। रूस के

विभिन्न किस्म के राजनैतिक आंदोलन के लिए इस वर्ग ने कार्यकर्ता और नेता मुहय्या कराये। लेनिन ने 1897 में शहरी पेटी बुर्जुआ की आबादी करीब 22 लाख आंकी थी।

रूस की विभिन्न वर्गों की विभिन्न पार्टियां उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में सामने आयीं। ये पार्टियां इस प्रकार थीं;

कॉन्स्टीट्यूशनल डेमोक्रेटिक पार्टी (कैडेट) : यह रूस के उदारपंथी पूंजीपति वर्ग की पार्टी थी। रूसी भाषा में इसे संक्षेप में कैडेट भी बोला जाता था। अक्टूबर 1905 में बनी यह पार्टी जारशाही को बनाये रखते हुए संवैधानिक सुधारों की पक्षधर थी। पहले विश्व युद्ध के समय इसने जारशाही की नीतियों का समर्थन किया। फरवरी 1917 की बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के दौरान इन्होंने राजतंत्र को बचाने का प्रयत्न किया। अस्थायी बुर्जुआ सरकार में कई महत्वपूर्ण पदों पर इस पार्टी के नेता रहे। प्रति क्रांतिकारी नीति अपनाते हुए इन्होंने घोर जनविरोधी फैसले लिये और अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय के बाद इन्होंने सोवियत सत्ता को उखाड़ फेंकने की हरचन्द कोशिश की।

दक्षिणपंथी या यमराज सभा: दूमा में दाहिनी हाथ की तरफ बैठने वाले सामंती जमींदारों के प्रतिनिधि थे। मजदूरों व किसानों के कट्टर दुश्मन। इन्होंने मजदूरों, किसानों व यहूदियों के क्रूर दमन में कोई कसर नहीं छोड़ी। 17 अक्टूबर 1905 को जार ने जो घोषणा पत्र जारी किया था, उसका ये विरोध करते थे।

अक्टूबर पंथी : बड़ी औद्योगिक पूंजी और पूंजीवादी ढंग से अपनी रियासतें चलाने वाले जमींदारों के हितों के प्रतिनिधि। जार के अक्टूबर घोषणापत्र का औपचारिक तौर पर समर्थन करने के कारण इनका नाम यह पड़ा। 1905 में इस पार्टी की स्थापना हुयी थी। ये जार की घरेलू व विदेश नीति के समर्थक थे।

समाजवादी क्रांतिकारी: 1901 के अंत तथा 1902 के शुरू में जन्मी एक निम्न पूंजीवादी पार्टी। विभिन्न नरोदवादी दलों तथा ग्रुपों के एकीकरण के फलस्वरूप यह अस्तित्व में आयी थी। समाजवादी क्रांतिकारी जारशाही के खिलाफ संघर्ष में वैयक्तिक आतंक को प्रमुख हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे। इनका समाजवाद टुटपुंजिया वर्ग का समाजवाद था।

1905-07 की क्रांति की पराजय के बाद इन्होंने क्रांतिकारी संघर्ष से हाथ खींच लिया और इनका अधिकांश हिस्सा कैडेट पार्टी के साथ खड़ा हो गया। फरवरी 1917 में बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के सफल होने के बाद ये अस्थायी सरकार में शामिल हो गये। पहले विश्व युद्ध के समय इन्होंने सामाजिक अंधराष्ट्रवादी स्थिति अपनायी और बाद के समय में इन्होंने मजदूर वर्ग का घोर विरोध किया। महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति को असफल बनाने का हर प्रयत्न किया। और सोवियत सत्ता के खिलाफ षड्यंत्र रचते रहे।

नवम्बर 1917 के अंत में जब महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय सुनिश्चित होती जा रही थी तब समाजवादी-क्रांतिकारियों के वामपक्ष ने वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों की स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की और सोवियत सत्ता को औपचारिक मान्यता दी और कुछ महीनों तक सोवियत सरकार में शामिल भी हुए। यह किसान समुदाय में अपने प्रभाव को बनाये रखने की उनकी नीति के तहत था। हालांकि बाद में इन्होंने भी सोवियत सत्ता के खिलाफ संघर्ष छेड़ दिया था।

रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी: 1898 में अस्तित्व में आयी मजदूर वर्ग की पार्टी। 1903 में रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी में क्रांतिकारी और अवसरवादी प्रवृत्तियां सामने आयीं। क्रांतिकारी हिस्से को बोल्शेविक और अवसरवादियों को मेंशेविक नाम से जाना गया। बोल्शेविकों ने 1912 में अपने को अलग पार्टी के रूप में संगठित किया और महान अक्टूबर क्रांति के बाद इन्होंने अपना नाम रूस की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) रख लिया।

मेंशेविक बुर्जुआ-जनवादी क्रांति में मजदूर वर्ग की अगुवा भूमिका नहीं मानते थे। ये उदारवादी पूंजीपति वर्ग को इस क्रांति का नेता मानते थे। प्रथम विश्व युद्ध में इन्होंने सामाजिक अंधराष्ट्रवादी भूमिका निभायी। महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति का घोर विरोध किया । मजदूर वर्ग की सत्ता के खिलाफ ये लगातार षड्यंत्र रचते रहे।

रूस में इनके अलावा विभिन्न राष्ट्रीयताओं तथा निम्न पूंजीपति वर्ग के विभिन्न दल, ग्रुप पैदा होते रहे। रूस की क्रांतियों में ये समूह कोई विशेष प्रभाव नहीं डाल सके।

रूस की पहली क्रांति

रूस में उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में पूंजीवाद का तीव्र विकास हुआ था परन्तु सदी का अंत आते-आते संकट के बादल छाने लगे। यूरोप में औद्योगिक संकट के शुरू होने के साथ ही रूस भी उसकी चपेट में आ गया। कारखाने बंद होने लगे और मजदूरों को काम से निकाला जाने लगा। पूंजीपति वर्ग ने मजदूरों पर तीखा हमला बोला। उन्होंने काम पर लगे मजदूरों की तनख्वाह में भारी कमी कर दी।

मजदूर वर्ग में भारी असंतोष जन्म लेने लगा। मजदूर वर्ग के असंतोष ने आर्थिक हड़तालों से आगे बढ़कर राजनैतिक हड़तालों का रूप धारण कर लिया। जारशाही के खिलाफ आक्रोश फूटने लगा। जारशाही को मजदूर अपने ऊपर बोझ समझने लगे।

1901 से लेकर रूस-जापान युद्ध छिड़ने तक मजदूरों ने कई जुझारू हड़तालें व संघर्ष किये। इन संघर्षों में प्रमुख थे : 1901 में मई दिवस पर पीटर्सबर्ग के ओबूखोव के गोला-बारूद कारखाने की हड़ताल, मार्च 1902 में वातुम में बड़ी हड़तालें जिसमें सामाजिक

जनवादी सक्रिय थे, 1902 में रोस्तोव शहर में रेल मजदूरों की हड़ताल और 1903 में ट्रांस काकेशिया और उक्रेन के बड़े शहरों में मजदूरों की हड़तालें।

पीटर्सबर्ग के ओबूखोव की हड़ताल में मजदूरों और जार के सैनिकों के बीच खूनी संघर्ष हुआ था। मजदूरों ने पत्थर और लोहे के टुकड़ों से जार की हथियारों से लैस फौज का मुकाबला किया। मजदूर इस संघर्ष में हार गये। हार के बाद भयानक दमन हुआ। सैकड़ों मजदूर जेल में डाल दिये गये। इस संघर्ष ने पूरे रूस में मजदूरों को गहरे रूप से प्रभावित किया।

मजदूरों के इस जुझारू संघर्ष का प्रभाव समाज के अन्य तबकों किसानों और विद्यार्थियों पर भी पड़ा। इन संघर्षों में सबसे प्रमुख थे : 1902 के शुरुआती महीनों उक्रैन और बोल्गा प्रदेश में किसानों का संघर्ष तथा 1901-'02 में रूस के सभी विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की आम हड़ताल।

1902 की बसंत और गर्मी के समय उक्रेन व वोल्गा प्रदेश में जमींदारों के शोषण व आतंक से तंग आकर किसानों ने जमींदारों की कोठियों में आग लगा दी और उनकी जमीनें छीन ली। कई जमींदारों और देहाती थानेदारों की हत्या कर दी। जारशाही ने विद्रोही किसानों को दबाने के लिए क्रूर दमन का सहारा लिया। दर्जनों किसानों को गोली से उड़ा दिया गया और सैकड़ों को गिरफ्तार कर कठोर सजायें दी गयीं।

जारशाही के खिलाफ विद्यार्थियों के संघर्ष पर मजदूरों-किसानों के क्रांतिकारी संघर्ष का व्यापक प्रभाव था। जारशाही के तानाशाही पूर्ण रवैये और जनवादी अधिकारों का अभाव नौजवान विद्यार्थियों को क्षुब्ध करता था। उन्नीसवी सदी में जारशाही के खिलाफ संघर्षों की नौजवान, बुद्धिजीवी वर्ग की एक व्यापक परम्परा थी। नरोदवादी इस तबके पर व्यापक प्रभाव रखते थे। विद्यार्थियों को जबरदस्ती आम सिपाहियों की तरह फौज में भेजने की जार की नीति ने सभी विश्वविद्यालयों के छात्रों को आम हड़ताल में जाने को मजबूर किया था। इस हड़ताल में 30,000 विद्यार्थी शामिल हुए थे।

विद्यार्थियों की हड़ताल और उनके दमन ने जारशाही की मजबूत चूलों को भी हिलाया। उदारपंथी पूंजीपति वर्ग और जमींदार जारशाही के खिलाफ अपनी आवाज उठाने को मजबूर हुए।

यह काल रूस में उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों के अपने दमन और उत्पीड़न के खिलाफ मुखर और संगठित होने का काल भी था। हालांकि इस सब में व्यापक बदलाव जारशाही की जापान से हार और 1905 में फूटी पहली रूसी क्रांति के बाद आया।

लेनिन ने बोल्शेविज्म के इतिहास की मुख्य मंजिल के बारे में बताते हुए 1903-05 के काल को 'क्रांति की तैयारी के वर्ष' की संज्ञा दी थी। लेनिन ने कहा था यह काल ऐसा था जिसमें विभिन्न वर्ग आने वाली लड़ाइयों में अपने लिए उचित विचारधारात्मक तथा राजनीतिक शस्त्र गढ़ रहे थे।

ऐसा ही शस्त्र इस काल में लेनिन के नेतृत्व में गढ़ा गया जिसे बोल्शेविज्म के नाम से जाना गया।

रूस की सोशल-डेमोक्रेट लेबर पार्टी की स्थापना यद्यपि 1898 में ही हो गई थी परन्तु अपर्याप्त विचारधारात्मक-राजनैतिक व सांगठनिक तैयारी के चलते यह काम तभी हो सका जब लेनिन ने इस्क्रा के जरिये इस काम को किया। यह क्रांतिकारी मार्क्सवादियों का अखिल रूसी पैमाने पर पहला अखबार था। इसने रूसी सो.डे.ले. पार्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

1903 में रूसी सो.डे.ले. पार्टी की दूसरी कांग्रेस हुयी। इस कांग्रेस में 'कैसी पार्टी होनी चाहिए' के सवाल पर मतभेद उभर कर सामने आये। एक पार्टी के भीतर दो दल-बोल्शेविक और मेंशेविक - बन गये। 1912 तक यह स्थिति तब तक कायम रही जब तक बोल्शेविकों ने अपने को अलग कर एक क्रांतिकारी मजदूर पार्टी के रूप में संगठित नहीं कर लिया। पहली रूसी क्रांति के समय और उसके बाद बोल्शेविक और मेंशेविक क्रांति के हर महत्वपूर्ण सवाल पर भिन्न-भिन्न अवस्थितियां रखते थे। मेंशेविक हर वर्ष बीतने के साथ सर्वहारा क्रांति के लक्ष्य और उद्देश्य से भटकते गये और अंत में बुर्जुआ वर्ग की गोद में जा बैठे।

मजदूरों, किसानों, निम्न पूंजीपति वर्ग और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के संघर्षों का क्रूर दमन करने के साथ जार अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए नये-नये अभियान संगठित कर रहा था। पुरानी साम्राज्यवादी ताकतों के साथ नयी ताकतों का उपनिवेशों के पुनर्बंटवारे को लेकर झगड़ा बढ़ रहा था। पूर्वी एशिया के देश चीन और कोरिया खास तौर पर जार के निशाने पर थे। चीन पर जार के अलावा जर्मन, ब्रिटेन, फ्रांस के साथ-साथ जापान की गिद्ध दृष्टि लगी हुयी थी। रूस के पूंजीपति चीन के एक हिस्से मंचूरिया को 'पीला रूस' बनाने की साजिशों में लगे हुए थे। चीन की जनता इन लुटेरों के खिलाफ खड़ी हुई परन्तु उसके विद्रोह को इन काली ताकतों ने क्रूरतापूर्वक दबा दिया।

चीन और कोरिया पर कब्जे के लिए उन्नीसवीं सदी के अंत में तेजी से साम्राज्यवादी ताकत बने जापान ने जार के मुकाबले बड़ी तैयारियां की थी। जार लड़ाई का ऐलान कर पाता उसके पहले ही उसने जनवरी 1904 में युद्ध छेड़ दिया। जापान ने रूस के कब्जे वाले चीन के पोर्ट आर्थर किले पर हमला कर और बन्दरगाह में खड़े रूसी बेड़े को नुकसान पहुंचा कर जार और रूसी पूंजीपतियों की योजनाओं पर पानी फेर दिया।

जार इसे रूस में मंडरा रही क्रांति की रोकथाम का एक उपाय समझता था। परन्तु हुआ उल्टा। इस युद्ध से क्रांति और करीब आ गई। युद्ध में जार की सेना का शीघ्र ही पतन हो गया। जार की फौज के तीन लाख आदमियों में से एक तिहाई से अधिक इस लड़ाई में हताहत हुए या फिर जापान द्वारा बंदी बना लिए गये। । जार को बेहद शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ा। जापान ने अपनी शर्तों

पर संधि की। इस युद्ध के साथ जापान ने कोरिया पर कब्जा कर लिया और रूस से पोर्ट आर्थर, सखालिन का आधा द्वीप हासिल कर लिया।

अपने से आकार में बेहद छोटे देश जापान से मिली हार ने जारशाही के बारे में गढ़े गये कई मिथकों को ध्वस्त कर दिया। जारशाही के खिलाफ पहले से चला आ रहा क्षोभ और बढ़ गया। जारशाही के पतन की शुरुआत हो चुकी थी। 1905 में पहली रूसी क्रांति ने शीघ्र ही दस्तक दे दी। क्रांति के लिए पूरे रूस में परिस्थितियां तैयार हो चुकी थीं।

क्रांति की घोषणा 'खूनी इतवार' की घटना से हुयी। 3 जनवरी 1905 में रूस के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र पीटर्सबर्ग के एक सबसे बड़े कारखाने पुतिलोव में चार मजदूरों को निकाले जाने की वजह से हड़ताल शुरू हुयी। इस हड़ताल में अन्य कारखानों के मजदूरों के शामिल हो जाने से यह आम हड़ताल में तब्दील हो गयी। जार सरकार ने हड़ताल के दमन की योजना बनायी। गेपन नामक एक पादरी, जो कि जार की पुलिस का एक मोहरा था, ने षड्यंत्रकारी ढंग से मजदूरों को अपनी मांगें जार के समक्ष पेश करने के लिए तैयार किया।

9 जनवरी, 1905 की सुबह-सुबह ही मजदूर अपने पूरे परिवार के साथ, जिनमें औरतें, बच्चे, बूढ़े सभी शामिल थे, जार की तस्वीरें, चर्च के झण्डे लिये और धार्मिक गीत गाते हुए, निहत्थे ही गेपन पादरी के नेतृत्व में जार के शरद प्रासाद की ओर चले। इस जुलूस में करीब डेढ़ लाख लोग शामिल थे।

ये निहत्थे लोग जार को अपनी बुरी हालत को बताना चाहते थे। जार ने उनकी प्रार्थना सुनने के बजाय अपनी फौज को मजदूरों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। एक हजार से ज्यादा मजदूर मारे गये। हजारों घायल हुए। पीटर्सबर्ग की सड़कें मजदूरों के खून से नहा गयीं।

इस 'खूनी इतवार' की खबर जैसे ही रूस के अन्य स्थानों पर फैली वैसे ही पूरा देश जार के खिलाफ गुस्से और घृणा से भरकर सड़कों पर उतर आया। 'जारशाही मुर्दाबाद!' के नारों के साथ क्रांति की शुरूआत हो गयी।

पीटर्सबर्ग, मास्को, वारसा, रीगा, बाकू जैसे शहरों में अच्छी तरह से संगठित हड़तालें आयोजित हुयीं। सोशल डेमोक्रेसी का असर तेजी से बढ़ने लगा। ओदेसा, वारसा, रीगा, लोत्स में मई दिवस के प्रदर्शनों में मजदूरों और जार के सैनिकों के बीच टक्करें हुईं।

1905 की गर्मियों में सबसे बड़ी हड़ताल इवानोवोवज्नेसेंस्क के मजदूरों ने की थी। ढाई महीने चली इस हड़ताल में हजारों मजदूरों जिसमें महिलायें शामिल थीं, ने भाग लिया। इस हड़ताल का जारशाही द्वारा भीषण दमन किया गया। हड़ताल को संचालित करने के लिए मजदूरों ने जो समिति बनायी थी, जिसे सोवियत कहा गया, मजदूरों के भावी शासन का रूप बनी। यह मजदूरों की पहली सोवियत थी।

मजदूरों के साथ किसान भी जाग गये। उन्होंने देहात में जमींदारों की जमीनें छीन लीं और गल्ला आपस में बांट लिया। हालांकि किसान आंदोलन का प्रभाव बेहद सीमित ही बना रहा।

1905-07 क्रांति के दौर की एक बेहद महत्वपूर्ण घटना काले समुद्र के पोतेमकिन नामक युद्ध पोत पर विद्रोह था। कई दिनों तक इस युद्धपोत पर लाल झण्डा फहराता रहा। पोतेमकिन की लड़ाई का अंत हार में हुआ परन्तु भावी क्रांति में सैनिक मजदूरों किसानों के साथ खड़े होंगे इसका संकेत तभी मिल गया।

अक्टूबर 1905 में रेलवे मजदूरों की हड़ताल हुई। और यह हड़ताल अखिल रूसी हड़ताल में शीघ्र ही बदल गयी। निम्न पूंजीपति वर्ग के लोग भी इस हड़ताल में मजदूरों के साथ हो लिए। इस हड़ताल ने सरकार को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया। इस हड़ताल से डरकर जार ने 17 अक्टूबर 1905 का मशहूर घोषणापत्र निकाला और कई किस्म की नागरिक स्वतंत्रताओं का वादा किया गया। वैधानिक डूमा बुलाने का वादा किया गया।

'17 अक्टूबर का घोषणा पत्र' आम जनता के लिए एक छलावा साबित हुआ। जार नये हमलों की तैयारी के लिए ताकत जुटाने लगा। वहीं जनता ने अक्टूबर की आम हड़ताल में उठे क्रांति के ज्वार को दिसम्बर के सशस्त्र विद्रोह तक पहुंचा दिया। मास्को की सड़कों पर पहली मोर्चाबन्दी हुयी। मास्को विद्रोह को कुचलने के लिए जार ने पाशविक बर्बरता का परिचय दिया। और ऐसा ही अन्य शहरों प्रान्तों के सशस्त्र विद्रोह के साथ किया गया।

दिसम्बर 1905 के विद्रोह के समय यह क्रांति चरम पर थी। विद्रोह को निरंकुश जारशाही ने हरा दिया था। परन्तु क्रांति की यह ज्वाला 1907 तक जलती रही।

1905-07 की क्रांति के बारे में लेनिन ने लिखा था,

> "क्रांति के वर्ष (1905-07)। सभी वर्ग खुलकर मैदान में आ जाते हैं। कार्यक्रम और कार्यनीति से सम्बंधित सभी विचारों की परख जनता की कार्यवाहियों से की जाती है। हड़ताली संघर्ष व्यापकता और उग्रता में संसार में अभूतपूर्व रूप धारण कर लेता है। आर्थिक हड़तालें राजनीतिक हड़तालों में बदल जाती हैं और राजनैतिक हड़तालें विद्रोह का रूप धारण कर लेती हैं। ... ... संघर्ष के स्वतः स्फूर्त विकास में संगठन का सोवियत रूप उत्पन्न होता है। ... ... जहां तक जनता को और नेताओं को, वर्गों को और पार्टियों को राजनीतिक विज्ञान की बुनियादी बातें सिखाने का सम्बन्ध है, इस काल का एक महीना "शान्तिमय" "सांविधानिक" विकास के एक पूरे वर्ष के बराबर था। 1905 **के "पूरे रिहर्सल" के बिना 1917 में अक्टूबर क्रांति की विजय असम्भव थी।** (लेनिन, 'वामपंथी कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज' पृष्ठ 256-257, सं.र. दस खण्डों में, खण्ड 9, जोर हमारा)

क्रांति की पराजय के बाद प्रतिक्रियावाद की आंधी चल पड़ी। यह समय तीन वर्षों तक कायम रहा। लेनिन ने इस काल की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार बतायी हैं;

"प्रतिक्रियावाद के वर्ष (1907-1910)। जारशाही की जीत हुई। सभी क्रांतिकारी और विरोध पक्षीय पार्टियां हार गयीं। राजनीति का स्थान निराशा, पस्तहिम्मती, फूटों, अव्यवस्था, गद्दारी और अश्लीलता ने ले लिया। दार्शनिक भाववाद की ओर झुकाव बढ़ने लगा, रहस्यवाद प्रतिक्रांतिकारी भावनाओं का आवरण बन गया।

... ...

विजयी जारशाही को रूस में बुर्जुआपूर्व, पितृसत्तात्मक जीवन-प्रणाली के अवशेषों को और भी तेजी से मिटाने को मजबूर होना पड़ा है। देश का बुर्जुआ विकास अद्‌भुत तेजी से आगे बढ़ता जाता है। वर्गों से परे और वर्गों के ऊपर रहने के भ्रम, पूंजीवाद से बच सकने के भ्रम हवा हो जाते हैं। वर्ग संघर्ष एक बिल्कुल नये और अधिक स्पष्ट रूप में प्रकट होता है। ... ..." (पेज 257, पैरा 2, वही)

वर्ष 1910 के आते-आते मजदूर वर्ग के आंदोलन में फिर से उभार आना शुरू होता है। 1911 में हड़तालियों की तादाद एक लाख से ऊपर थी जबकि इससे पहले के वर्षों में पचास या साठ हजार तक ही थी। 1912 में यह संख्या 7,25000, 1913 में 8,87,000 और प्रथम विश्व युद्ध के शुरू होने के समय 1914 में 13,50,000 मजदूरों ने हड़तालों में भागीदारी की। इन संघर्षों में सबसे महत्वपूर्ण व नये युग की द्योतक साईबेरिया में लीना की सोने की खानों में मजदूरों पर गोली चलाने के बाद उपजी राजनीतिक हड़ताल थी। पीटर्सबर्ग, मास्को और दूसरे औद्योगिक केन्द्रों और प्रदेशों में मजदूर वर्ग ने, लीना गोलीकाण्ड जिसमें पांच सौ से ज्यादा मजदूर मारे गये थे का जवाब प्रदर्शन और आम हड़ताल से दिया।

मजदूर आंदोलन के उभार का फर्क किसानों और सैनिकों पर भी पड़ा। किसान फिर जमींदारों के खिलाफ बगावत करने लगे। 1910-14 के सालों में किसानों के असंतोष की 13,000 से ज्यादा घटनाएं घटीं। फौज के अन्दर कई विद्रोह इस बीच हुए। तुर्किस्तान, बाल्टिक समुद्री बेड़े और सेवास्तोपोल में विद्रोह की घटनाएं घटीं। ये घटनाएं आने वाले तूफान की सूचक थीं। रूस में क्रांति की स्थितियां परिपक्व हो रही थीं और पहले विश्व युद्ध ने इसमें आग में घी का काम किया।

पहला विश्व युद्ध और रूस

यूरोप की सभी बड़ी ताकतों की तरह रूस भी लम्बे समय से युद्ध की तैयारियां कर रहा था। जार, युद्ध के जरिये अपने साम्राज्य का और विस्तार चाहता था। और इसके अलावा रूस में पुनः मजदूरों, किसानों व अन्य तबकों के संघर्षों से नयी क्रांति के उठ खड़े होने की संभावना को कुचलने के हथियार के रूप में भी युद्ध को देख रहा था।

युद्ध की तैयारियां साम्राज्यवादी शक्तियां ही नहीं बल्कि वे लोग भी कर रहे थे जो मजदूर वर्ग के प्रतिनिधि थे। वे इस रूप में कर रहे थे कि युद्ध छिड़ने की स्थिति में उनकी कार्यनीति क्या होगी। 1912 से ही इस कार्यनीति को लेकर मतभेद उजागर होने शुरू हो गये थे। और 1914 में जब युद्ध शुरू हुआ तो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में अपनी सही और क्रांतिकारी कार्यनीति के कारण बोल्शेविक अलग-थलग पड़ गये। उस समय के अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के केन्द्र, द्वितीय इण्टरनेशनल की अधिकांश पार्टियों ने, युद्ध में 'पितृ भूमि की रक्षा' के नाम पर अपने-अपने देश की युद्धोन्मादी सरकारों का पक्ष लिया। युद्ध के शुरू होने के साथ ही दूसरे इंटरनेशनल का पतन हो गया और उसमें शामिल पार्टियां अंधराष्ट्रवादी पार्टियों में बदल गयीं। बोल्शेविक ही रूसी ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में उभरे।

लेनिन ने युद्ध के सम्बन्ध में क्रांतिकारी अवस्थितियां दीं। उन्होंने बताया कि युद्ध पूंजीवाद का अनिवार्य अंग है। उन्नीसवीं सदी के अंत में जब पूंजीवाद ने अपनी उच्चतम अवस्था की मंजिल साम्राज्यवाद में प्रवेश किया तब से युद्ध और भी अनिवार्य हो गये हैं। इसके साथ ही लेनिन ने बताया कि दो तरह के युद्ध होते हैं : एक, अन्यायपूर्ण जैसे कि पहले और दूसरे विश्व युद्ध थे, और दूसरे न्यायपूर्ण युद्ध जो कि जनता या राष्ट्रों की मुक्ति के लिए लड़े जाते हैं।

पहला विश्वयुद्ध साम्राज्यवादी लुटेरों के बीच का युद्ध था। यह युद्ध साम्राज्यवादियों के बीच दुनिया के पुनर्बंटवारे को लेकर था। उन्नीसवीं सदी के आखिर तक पूरी दुनिया पहले से स्थापित ताकतों ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, रूस आदि के बीच पहले से ही बंट चुकी थी। नयी उभरती साम्राज्यवादी ताकतें जर्मनी, इटली, जापान पहले से बंट चुकी दुनिया में अपना हिस्सा चाहते थे। जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस ने युद्ध की तैयारियां की हुयी थी। फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन पर रूस की निर्भरता के बारे में पहले ही बताया जा चुका है। 1907 से इन तीनों देशों ने एक त्रिगुट बनाया हुआ था। आस्ट्रिया, हंगरी, जर्मनी, इटली ने एक अलग गुट बनाया हुआ था। इटली युद्ध शुरू होने पर इस गुट को छोड़कर 'त्रिगुट' में शामिल हो गया था। बल्गारिया और तुर्की ने दूसरे गुट का साथ दिया।

"जर्मनी ने साम्राज्यवादी युद्ध के लिए इस उद्देश्य से तैयारी की थी कि ब्रिटेन और फ्रांस से उनके उपनिवेश और रूस से उक्रेन, पोलैण्ड और बाल्टिक प्रदेश छीन ले। ... ...

"जार सरकार तुर्की का बंटवारा करना चहती थी और कुस्तुन्तुनियां पर कब्जा करने का सपना देखती थी। वह काले सागर से भूमध्य सागर की तरफ जाने वाले जलडमरूमध्य पर कब्जा जमाने की सोच रही थी। जार सरकार की योजनाओं में आस्ट्रिया-हंगरी के एक हिस्से-गैलीशिया - पर कब्जा करना शामिल था।

"युद्ध के जरिये, ग्रेट ब्रिटेन चाहता था कि अपने खतरनाक प्रतिद्वन्द्वी जर्मनी को कुचल दे। युद्ध के पहले, जर्मनी का माल दुनिया के बाजार से अंग्रेजी माल को लगातार बाहर करता जा रहा था। इसके सिवा, ब्रिटेन, तुर्की के मैसोपोटामिया और फिलिस्तीन को हड़पना चाहता था ... ...।

"फ्रांस के पूंजीपति जर्मनी के सार प्रदेश और अलसॉस लोरेन छीन लेने की कोशिश में थे। ये दोनों कोयले और लोहे के समृद्ध प्रदेश थे, जिनमें से दूसरे को जर्मनी ने 1870-71 की लड़ाई में फ्रांस से छीन लिया था।

"इस तरह साम्राज्यवादी युद्ध पूंजीवादी राष्ट्रों के दो दलों के बीच गम्भीर विरोधों से पैदा हुआ।

"दुनिया का फिर से बंटवारा करने के लिए, इस लूट-मार की लड़ाई का असर सभी साम्राज्यवादी देशों के हितों में पड़ा। नतीजा यह हुआ कि जापान, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और दूसरे कई देश भी इस लड़ाई में शामिल हो गये।

"युद्ध विश्व युद्ध बन गया। ... ..." (सो.सं. की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, पेज 190-191, वही)

जुलाई 1914 से शुरू हुआ यह युद्ध नवम्बर 1918 तक चला। इस युद्ध में अनुमानतः एक करोड़ साठ लाख लोग मारे गये जिनमें 90 लाख फौजी थे और 70 लाख आम नागरिक थे। युद्ध के दायरे के व्यापक होने तथा घातक रासायनिक हथियारों के इस्तेमाल होने से व्यापक तबाही फैली। यूरोप, अफ्रीका, पश्चिम व पूर्व एशिया आदि कई हिस्से इस युद्ध की चपेट में आ गये थे। युद्ध ने कई देशों की अर्थव्यवस्था को खासा नुकसान पहुंचाया था। युद्ध का लाभ मुख्यतः ब्रिटेन, इटली और सं.रा. अमेरिका को मिला परन्तु रूस, फ्रांस, आस्ट्रिया की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान उठाना पड़ा। इस युद्ध में रूसी, जर्मन, आतोमन और आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य का अंत हो गया।

रूस में युद्ध आर्थिक जीवन की जड़ें कमजोर कर रहा था। मजदूर किसान युद्ध के द्वारा फैलायी गयी तबाही के शिकार होकर भुखमरी के कगार पर पहुंच गये थे। जारशाही ने जबरदस्ती 1 करोड़ 40 लाख लोगों को आर्थिक कामों से हटाकर फौज में भर्ती कर लिया था। मिलें और कारखाने बन्द हो रहे थे। इसके उलटे पूंजीपति और जमींदार युद्ध से रकम बना रहे थे। आम जनता भूखे-नंगे थी परन्तु उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं था।

युद्ध के मोर्चे से जारशाही के लिए अच्छी खबरें नहीं आ रही थीं। उसकी फौज लगातार पिट रही थी और जर्मनी रूस के कई हिस्सों को अपने कब्जे में ले चुका था। जार के मंत्री, अफसर जर्मन सेना की मदद चोरी छिपे कर रहे थे। 1916 तक जर्मनी पोलैण्ड और बाल्टिक क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले चुका था।

जारशाही के साथ-साथ तबाही-बर्बादी फैलाने वाले युद्ध के खिलाफ आम जनता में गुस्सा लगातार बढ़ रहा था। मजदूरों, किसानों, सिपाहियों, बुद्धिजीवियों के क्रांतिकारी आंदोलन के निशाने पर जारशाही तेजी से आती गयी। एक समय ऐसा आया कि पूंजीपति वर्ग भी जार के खिलाफ हो गया। जार को सत्ताच्युत कर अपने हाथ में सत्ता लेने की लालसा जो वर्षों से पल रही थी वह उसे फलीभूत होते दिखायी देने लगी। जार को सत्ता से बेदखल करने की रूसी पूंजीपतियों की योजनाओं को ब्रिटिश और फ्रांसीसी पूंजीपतियों का भी साथ मिल गया। जारशाही अंतिम सांसें गिनने लगी। और अंततः फरवरी 1917 में क्रांति ने दस्तक दे दी।

III

फरवरी क्रांति : सफल बुर्जुआ जनवादी क्रांति

"1917 के साल की शुरुआत 9 जनवरी की हड़ताल से हुई। इस हड़ताल के दौर में पेत्रोग्राद, मास्को, बाकू और निज्नीनवगरोद में प्रदर्शन हुए। मास्को में लगभग एक-तिहाई मजदूरों ने 9 जरवरी की हड़ताल में हिस्सा लिया। ... ... पेत्रोग्राद में, विबोर्ग मार्ग पर एक प्रदर्शन में सैनिक भी शामिल हो गये। ... ...

"18 फरवरी 1917 को, पेत्रोग्राद के पुतिलोव कारखाने में हड़ताल शुरू हो गयी। 22 फरवरी को, ज्यादातर बड़े कारखानों के मजदूरों ने हड़ताल कर दी। 23 फरवरी (8 मार्च) को, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पेत्रोग्राद बोल्शेविक कमेटी के बुलावे पर, मेहनतकश औरतें भुखमरी, युद्ध और जारशाही के खिलाफ प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर आ गयीं। पेत्रोग्राद के मजदूरों ने नगरव्यापी हड़ताल आंदोलन करके मेहनतकश औरतों के प्रदर्शन का समर्थन किया।

... ...

"24 फरवरी ... ... लगभग दो लाख मजदूर हड़ताल पर थे।

"25 फरवरी (10 मार्च) को, समूचा मजदूरों का पेत्रोग्राद क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गया। जिलों की राजनैतिक हड़तालें समूचे शहर की आम राजनीतिक हड़ताल में घुल-मिल गयीं। हर जगह प्रदर्शन और पुलिस से टक्करें हुईं। मजदूरों के जन समूह पर लाल झण्डे लहराते थे, जिनके ऊपर लिखा था : 'जार का नाश हो!' 'युद्ध मुर्दाबाद!' 'हमें रोटी दो!'

"26 फरवरी (11 मार्च) को, सबेरे, राजनीतिक हड़ताल और प्रदर्शन ने विद्रोह का रूप लेना शुरू किया। मजदूरों ने सादी और हथियारबंद पुलिस से हथियार छीन लिए और खुद हथियारों से लैस हो गये। फिर भी, पुलिस से हथियारबंद टक्कर का अंत ज्नामेन्स्काया चौराहे पर एक प्रदर्शन पर गोलियां चलने में हुआ। ... ...

26 फरवरी (11 मार्च) को, पावलोव्स्की पलटन की रिजर्व बटालियन की चौथी कम्पनी ने गोली चलाई, लेकिन मजदूरों पर नहीं बल्कि पुलिस सवारों के जत्थों पर जो मजदूरों से टक्कर ले रहे थे। फौजियों को अपनी तरफ करने के लिए बहुत ही जोरदार और जमकर कोशिश की गयी, खास तौर से मजदूर औरतों की तरफ से, जिन्होंने सीधे फौजियों से अपील की, उनसे भाईचारा कायम किया और उन्हें बुलावा दिया कि घृणित जारशाही का खात्मा करने में जनता का साथ दें।

" उस समय हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति की ब्यूरो बोल्शेविक पार्टी के अमली काम का संचालन करती थी। ... ... 26 फरवरी (11 मार्च) को केन्द्रीय समिति की ब्यूरो ने एक घोषणापत्र निकाला जिसमें लोगों को बुलावा दिया गया कि जारशाही के खिलाफ हथियारबंद संघर्ष जारी रखें और अस्थायी क्रांतिकारी सरकार बनायें।

"27 फरवरी (12 मार्च) को, पेत्रोग्राद की फौज ने मजदूरों पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया और जनता का साथ देने लगी। 27 फरवरी के सबेरे तक जितने सिपाही विद्रोह में शामिल हुए उनकी तादाद दस हजार से ज्यादा न थी, लेकिन उस दिन की शाम तक उनकी तादाद साठ हजार तक पहुंच गयी।

"जो मजदूर और सिपाही विद्रोह करने के लिए उठ खड़े हुए थे, उन्होंने जार के मंत्रियों और जनरलों को गिरफ्तार करना और क्रांतिकारियों को जेल से छोड़ना शुरू कर दिया। छूटे हुए राजनीतिक कैदी क्रांतिकारी संघर्ष में शामिल हो गये।

"सड़कों पर पुलिस और ऊंचे कोठों पर मशीनगनें लगाये हथियारबंद दस्ते गोली चला रहे थे। लेकिन, फौज तेजी से मजदूरों की तरफ आ गयी और इस बात ने निरंकुश जारशाही की तकदीर का फैसला कर दिया।

"जब पेत्रोग्राद में क्रांति की विजय का समाचार दूसरे शहरों और युद्ध के मोर्चे पर पहुंचा, तो मजदूर और सिपाही जार के अफसरों को हटाने लगे।

"फरवरी की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति की जीत हुई।" (सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, पेज 206-208, वही)

क्रांति के सम्पन्न होते ही जारशाही का स्थान लेने को पूंजीपति वर्ग और ऐसे "जमींदार जो पूंजीपति बन जाने" वाले थे ने अपना दांव चला। 27 फरवरी को जार कालीन चौथी राज्य दूमा के उदारपंथी सदस्यों ने समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं के साथ एक गुप्त समझौता करके राज्य दूमा की अस्थायी कमेटी बना ली। इस कमेटी का मकसद नयी सरकार का गठन था। सत्ता के षड्यंत्र में लिप्त पूंजीपति वर्ग के बरक्स सर्वहारा, किसान और सैनिक अपनी मांगें पूरी करने तथा शांति स्थापित करने के लिए सोवियतों के रूप में अपनी जनसत्ता कायम कर रहे थे।

1905 की असफल क्रांति के एक महत्वपूर्ण सबक के रूप में सोवियतें फरवरी क्रांति के शुरुआती दिनों में ही कायम हो गयी थीं। विद्रोही मजदूरों और सैनिकों ने अपनी सोवियतें बना ली थीं। ये सोवियतें ही विद्रोही जनता को नेतृत्व दे रही थीं। 1905 की सोवियतों के मुकाबले ये सोवियतें इस रूप में भिन्न थीं कि उसमें मजदूर और सैनिक दोनों के प्रतिनिधि शामिल थे जबकि 1905 में सिर्फ मजदूर प्रतिनिधि ही सोवियतों में शामिल थे। मजदूर और सैनिकों की ये सोवियतें बोल्शेविकों की प्रेरणा और पहलकदमी से बनी थीं।

सोवियतों पर अपना प्रभाव कायम करने के काम में बोल्शेविक अधिक सफल नहीं हो रहे थे। उनकी पार्टी के अधिकांश नेता या तो जेल में थे या फिर निर्वासन में। जो रूस के भीतर थे वे सड़कों पर मोर्चा संभाले हुए जन संघर्षों को नेतृत्व दे रहे थे। मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी सोवियतों में सीटों पर कब्जा करके अपना बहुमत बना रहे थे। पेत्रोग्राद और मास्को की सोवियतों और उसकी कार्यकारिणी समिति का नेतृत्व समझौतापरस्त इन पार्टियों के हाथों में था। मेंशेविक अपनी सोच और कार्यनीति के कारण उदारपंथी पूंजीपति वर्ग के पिच्छलग्गू काफी समय पूर्व से थे। वे सर्वहारा वर्ग को छलने के लिए तैयार थे। बोल्शेविकों का प्रभाव इवानोवोवज्नेसेंस्क, क्रासनोयार्स्क और कई अन्य जगहों पर था।

27 फरवरी को बनी अस्थायी कमेटी जिसका नेतृत्व दूमा का पूर्व सभापति रोद्जियांको कर रहा था, एक जमींदार और सम्राटवादी था। इस अस्थायी कमेटी तथा सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, जिसमें मेंशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों के नेता जमे हुए थे, के बीच एक गुप्त समझौता होता है। वे इस समझौते की भनक बोल्शेविकों को नहीं लगने देते हैं।

समझौते के तहत एक नयी सरकार का गठन किया जाता है। यह सरकार अस्थायी थी। इस सरकार के कर्ताधर्ता पूंजीपति और पूंजीवादी जमींदार थे।

प्रिंस ल्वोव अस्थायी पूंजीवादी सरकार का नेतृत्व कर रहा था। इस सरकार में कैडेटों का प्रधान मिल्यूकोव, अक्टूबरपंथियों का प्रधान गुचकोव, समाजवादी क्रांतिकारी करैन्स्की के साथ पूंजीपति वर्ग के अन्य प्रतिनिधि शामिल थे।

समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविकों के नेतृत्व वाली सोवियत कार्यकारिणी समिति के समझौते का सीधा अर्थ पूंजीपति वर्ग के हाथों में सत्ता सौंपना था। सोवियतों के प्रतिनिधियों ने बोल्शेविकों के इस समझौते के चरित्र के खुलासे और विरोध के बावजूद बहुमत से इसे पास कर दिया।

रूस में वस्तुतः फरवरी क्रांति के बाद दो सत्तायें सामने आ चुकी थीं। एक अस्थायी सरकार के नेतृत्व में पूंजीवादी सत्ता तथा दूसरी मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत।

दुहरी सत्ता की विलक्षणता और महत्व के बारे में लेनिन ने लिखा था,

"दुहरी सत्ता की विलक्षणता तथा उसका वर्ग महत्व

" 5. हमारी क्रांति की सबसे मुख्य विलक्षणता, अपने प्रति सोच-विचारभरा रुख अपनाने का अत्यंत जोरदार तकाजा करने वाली विलक्षणता **दुहरी सत्ता** है, जो क्रांति की विजय के बाद के पहले ही दिनों में निर्मित हुई।

"यह दुहरी सत्ता **दो** सरकारों के अस्तित्व में प्रकट होती है : बुर्जुआ वर्ग की मुख्य, असल, वास्तविक सरकार, ल्वोव और उनकी मंडली की "अस्थायी सरकार" जिसने सत्ता के तमाम निकायों की बागडोर को अपने हाथों में रखा है; और मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के रूप में अतिरिक्त, आनुषंगिक, "नियंत्रणकारी" सरकार, जिसके हाथों में

राजसत्ता के कोई नियम नहीं हैं, परन्तु जो जनता की सुस्पष्ट तथा असंदिग्ध बहुसंख्या पर, हथियारबंद मजदूरों और सैनिकों पर प्रत्यक्ष रूप से अवलम्बित है।

"इस दुहरी सत्ता का वर्ग स्रोत तथा वर्ग महत्व इसमें निहित है कि मार्च, 1917 की रूसी क्रांति ने न केवल पूरे जारशाही राजतंत्र पर ही झाड़ू फेरा, न केवल पूरी सत्ता बुर्जुआ वर्ग को सौंपी, अपितु सर्वहारा वर्ग और किसान समुदाय के क्रांतिकारी-जनवादी अधिनायकत्व के **बहुत निकट पहुंची।** मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद तथा अन्य, स्थानीय, सोवियतें ठीक ऐसा ही अधिनायकत्व (याने कानून पर नहीं, अपितु आबादी के हथियारबंद जनसाधारण की शक्ति पर सीधे अवलंबित सत्ता), ठीक उपरोक्त वर्गों का अधिनायकत्व है।

"6. रूसी क्रांति की दूसरी, अत्यंत महत्वपूर्ण विलक्षणता इसमें निहित है कि मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत, जो, जैसा कि सब चीजों से पता चलता है, अधिकांश स्थानीय सोवियतों के विश्वास का उपभोग करती है, बुर्जुआ वर्ग तथा **उसकी** अस्थायी सरकार के साथ अस्थायी सरकार का समर्थन करने के बारे में समझौता कर चुकने पर राज्य सत्ता **स्वेच्छापूर्वक** उनके हवाले कर रही है, पहला स्थान स्वेच्छापूर्वक उनके लिए **खाली कर रही है** और अपनी भूमिका पर्यवेक्षक तक, संविधान सभा के समाह्वान पर (जिसकी तिथि अस्थायी सरकार ने अभी तक घोषित तक नहीं की) नियंत्रणकर्ता तक सीमित कर रही है।

"इस अनुपम विलक्षणता ने, जो इस रूप में इतिहास में अपूर्व है, दो अधिनायकत्वों का **अंतर्गुंथन** कर दिया : बुर्जुआ वर्ग का अधिनायकत्व (इसलिए कि ल्वोव और उनकी मंडली की सरकार अधिनायकत्व है, याने ऐसी सत्ता है, जो कानून पर, जनता द्वारा पहले व्यक्त इच्छा पर आधारित नहीं, अपितु बल-प्रयोग द्वारा ऐसे हस्तगतकरण पर आधारित है, जिसे एक निश्चित वर्ग ने, याने बुर्जुआ वर्ग ने सम्पन्न किया है) तथा सर्वहारा वर्ग और किसान समुदाय का अधिनायकत्व (मजदूर तथा सैनिक प्रतिनिधि सोवियत)।

"इसमें रत्तीभर संदेह नहीं है कि ऐसा "अंतर्गुंथन" देर तक जारी **नहीं रह सकता।** एक राज्य में दो सत्ताएं **विद्यमान नहीं रह सकती।** उनमें से एक को हटना पड़ेगा और पूरा रूसी बुर्जुआ वर्ग सैनिक तथा मजदूर प्रतिनिधि सोवियतों को दूर रखने और कमजोर बनाने, उन्हें शून्य बना देने तथा बुर्जुआ वर्ग की एकछत्र सत्ता निर्मित करने के लिए हर तरीके से एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा है।

"दुहरी सत्ता क्रांति के विकास में मात्र **संक्रमणकालीन** घड़ी है, जब वह सामान्य बुर्जुआ-जनवादी क्रांति से आगे बढ़ चुकी है, **परंतु** सर्वहारा वर्ग तथा किसान समुदाय के "विशुद्ध" अधिनायकत्व तक **अभी नहीं पहुंची है।**

"इस संक्रमणकालीन अस्थिर स्थिति का वर्ग महत्व (और वर्ग स्पष्टीकरण) यह है : समस्त क्रांतियों की भांति हमारी क्रांति ने जारशाही के विरुद्ध संघर्ष के लिए जनसाधारण से अधिकतम वीरता तथा आत्मबलिदान का तकाजा किया, और उसने साथ ही अपूर्व विशाल संख्या में आम लोगों को तत्काल **आंदोलन में खींचा।**

"समस्त वास्तविक क्रांतियों के प्रमुख, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक राजनीतिक लक्षणों में से एक है "आम लोगों" की, जो राजनीतिक जीवन तथा राज्य संगठन में सक्रियतापूर्वक, स्वतंत्र रूप से, कारगर ढंग से भाग लेने लगते हैं, संख्या में असामान्यतः द्रुत, एकाएक तेज वृद्धि।

"यही बात रूस पर भी लागू होती है। रूस में जीवन में इस समय उबाल आ रहा है। लाखों, दसियों लाख लोग, जो दस वर्ष से राजनीतिक दृष्टि से सोये हुए थे, जिन्हें जारशाही द्वारा भयंकर उत्पीड़न तथा जमींदारों और कारखानेदारों के लिए कमरतोड़ काम ने राजनीतिक दृष्टि से कुचल दिया था, **जाग उठे हैं** और राजनीति की ओर **खिंच आये हैं।** ... ..." (लेनिन, हमारी क्रांति में सर्वहारा वर्ग के कार्यभार, पेज 348-350, खण्ड-6, सं.र.दस खण्डों में, जोर मूल में)

इस लेख में लेनिन आगे इस बात की चर्चा करते हैं कि क्यों ऐसा हुआ कि सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने बुर्जुआ वर्ग की अस्थायी सरकार के हाथों में सत्ता सौंप दी। वे उसका वर्गीय आधार और रूस के समाज का चरित्र बतलाते हुए कहते हैं;

'रूस सारे यूरोपीय देशों में सबसे बड़ा टुटपुंजिया देश है।'

वे आगे लिखते है,

"एक विराट टुटपुंजिया लहर ने सब कुछ को अपनी चपेट में ले लिया है, तादाद ही नहीं, अपितु विचारधारा में भी सर्वहारा वर्ग को अपने वश में कर लिया है, याने मजदूरों की अत्यंत व्यापक मंडलियों को टुटपुंजिया राजनीतिक दृष्टिकोण से संदूषित कर दिया, उससे जकड़ दिया।

"टुटपुंजिया वर्ग वास्तविक जीवन में बुर्जुआ वर्ग पर अवलंबित होता है, वह स्वयं मालिकों की तरह जीवन-यापन करता है, सर्वहारा वर्ग की तरह नहीं (सामाजिक **उत्पादन** में **स्थान** की दृष्टि से), और विचारों में बुर्जुआ वर्ग का अनुसरण करता है।" (पृष्ठ 351, पैरा 1,2, वही, जोर मूल में)

ऐसी स्थिति में जब अस्थायी सरकार पर जनगण का भरोसा हो और वह अपनी ताकत और महान भविष्य को नहीं पहचान पा रही हो तो बोल्शेविक क्या करते। लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने एक क्षण को भी क्रांतिकारी वर्गों से अपने को अलग नहीं किया। उन्होंने अपने सामने कार्यभार रखा कि वे क्रांतिकारी वर्गों -मजदूरों व किसानों को बतायें कि अस्थायी सरकार का रूप साम्राज्यवादी है, समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविक वास्तव में गद्दार हैं और जनता की मांगे खास तौर पर शांति तब तक कायम नहीं हो सकती जब तक अस्थायी सरकार को इतिहास के कूड़ेदान में फेंक कर सारी ताकत को, सत्ता को सोवियतें अपने हाथ में न ले लें। अस्थायी सरकार के स्थान पर सोवियतों की सरकार न कायम हो जाये। बोल्शेविक बुर्जुआ-जनवादी क्रांति की चकाचौंध में, क्रांति की

प्रारम्भिक सफलताओं से किसी भी तरह प्रभावित हुए बिना अपने तात्कालिक वास्तविक कार्य सोवियत सत्ता कायम करने के काम में जुट गये।

IV

फरवरी क्रांति से अक्टूबर क्रांति की महायात्रा

1916 में लेनिन ने पूंजीवाद की उच्चतम अवस्था साम्राज्यवाद के बारे में कहा था कि यह 'सर्वहारा वर्ग की सामाजिक क्रांति की पूर्व बेला' है। उसी समय साथ ही उन्होंने स्थापित किया था कि साम्राज्यवाद की अवस्था में पूंजीवादी देशों का असमान आर्थिक और राजनैतिक विकास होता है। इस नियम के आधार पर लेनिन ने निष्कर्ष निकाला था कि सर्वहारा क्रांति कई देशों या एक देश में भी सम्पन्न हो सकती है।

फरवरी क्रांति के बाद से जिस ढंग से घटनाक्रम विकसित हो रहा था वह इस बात को स्थापित कर रहा था कि एक देश में सर्वहारा क्रांति हो सकती है और एक देश में समाजवाद का निर्माण किया जा सकता है।

पहला विश्व युद्ध अपने चरम पर था। अस्थायी सरकार का आचरण जारशाही से भिन्न नहीं था। वह युद्ध को समाप्त कर शांति स्थापित करने की जनता की मांग को पूरा करने के स्थान पर युद्ध को जारी रखे हुए भी। उसकी मंशा क्रांति से फायदा उठाकर, युद्ध को तीव्र कर कुस्तुनतुनिया, दर्रे दनियाल और गैलीशिया पर कब्जा करने की थी। अस्थायी सरकार के कर्ता-धर्ता अपने साम्राज्यवादी मंसूबे पूरा करना चाहते थे।

बोल्शेविकों की यह नीति कि यह युद्ध साम्राज्यवादी लुटेरों के बीच का युद्ध है, पहले जारशाही और फिर अस्थायी सरकार के आचरण ने व्यापक जनता के सामने एक दम स्पष्ट कर दी।

इसी तरह अस्थायी सरकार जनता की जमीन और रोटी की मांगों को न तो पूरा कर सकती थी और न ही उसके पास ऐसी कोई इच्छा या योजना थी। अस्थायी सरकार में बैठे पूंजीपति और जमींदार कैसे अपने ही वर्ग के खिलाफ काम करते।

असल में फरवरी क्रांति जिन सामाजिक अंतर्विरोधों से पैदा हुयी थी उन्हें हल नहीं कर सकी। शांति, रोटी, जमीन और राष्ट्रीय उत्पीड़न से मुक्ति वह नहीं दिला सकी। जारशाही के अंत से जनता ने जो जनवादी अधिकार (भाषण, प्रेस, सभा-संगठन बनाने, प्रदर्शन) हासिल किये थे उन पर अस्थायी सरकार की निगाह थी। खास कर सैनिकों की आजादी उनकी आंखों में चुभ रही थी। 'अनुशासन बहाल करने' के नाम पर वह सैनिकों और आम नागरिकों पर अपनी पूंजीवादी तानाशाही को ऐसे ढंग से लागू करना चाहती थी कि पूंजीपति वर्ग के हित सध सकें।

अस्थायी सरकार के व्यवहार से यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि वह जनता की आंखों में धूल झोंक कर राज्यतंत्र की रक्षा भी करना चाहती है। अस्थायी सरकार में शामिल गुचकोव ने जब 2 मार्च 1917 को रेलवे मजदूरों की सभा में अपने भाषण के अंत में जार निकोलस रोमानोव के भाई माइकेल के समर्थन में नारे लगाये तो मजदूरों को स्पष्ट हो गया कि क्रांति के खिलाफ षड्यंत्र करके बदले रूप में राजतंत्र की वापसी की साजिश रची जा रही है। लेकिन मजदूरों के आक्रोश ने स्पष्ट कर दिया कि जारशाही की किसी भी रूप में वापसी नहीं हो सकती है।

फरवरी क्रांति के बाद बोल्शेविक पार्टी के लिए खुले में काम करना सम्भव हो गया था। जारशाही के जमाने में पार्टी बेहद कठिन व खतरनाक परिस्थितियों में काम करती थी। ढेरों नेता जेल में या निर्वासन का जीवन जी रहे थे। पार्टी के नेता लेनिन और स्टालिन भी निर्वासन में थे। बोल्शेविकों को अब मौका मिला था कि वे खुलकर अपने विचारों के इर्द-गिर्द मजदूरों, किसानों, सैनिकों को संगठित कर सकें। 'बोल्शेविक पार्टी के इतिहास' के अनुसार उस समय चालीस या पैंतालीस हजार से ज्यादा सदस्य नहीं थे। लेकिन अप्रैल के अंत आते-आते लेनिन के दिशा-निर्देशों के अनुसार नये ढंग से जनवादी केन्द्रीयता के उसूलों का पालन करते हुए बोल्शेविक पार्टी की सदस्यता एक लाख से अधिक पहुंच गयी। वह रूसी सर्वहारा की जन राजनीतिक पार्टी (mass political party) के रूप में सामने आ चुकी थी।

लेनिन 3 अप्रैल (16 अप्रैल) 1917 को रूस लौटे। वे लम्बे समय से निर्वासन का जीवन जी रहे थे। फरवरी क्रांति के सम्पन्न होने के समय ही सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी की आगे की दिशा क्या होनी चाहिए इस सिलसिले में उन्होंने विदेश से पत्र लिखे थे। ये पत्र 'दूर देश से पत्र' के नाम से मशहूर हुए। ये पत्र 7 से 26 मार्च के बीच लिखे गये थे। इन पत्रों के माध्यम से लेनिन ने स्पष्ट रूप से बता दिया था कि बुर्जुआ क्रांति सम्पन्न हो गयी है। अब तुरन्त समाजवादी क्रांति के कार्यभार को पूरा करने का कार्य सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी को अपने हाथ में लेना चाहिए।

अपने इन्हीं विचारों को लेनिन ने रूस में लौटकर आने के अगले दिन पहले बोल्शेविकों की बैठक और उसके बाद मेंशेविक और बोल्शेविकों की मिली-जुली बैठक में प्रस्तुत किया। ये सैद्धान्तिक प्रस्थापनाएं "अप्रैल थीसिस" के नाम से मशहूर हो गयीं। इस थीसिस का सार यह था कि पूंजीवादी-जनवादी क्रांति से समाजवादी क्रांति की ओर या दूसरे शब्दों में क्रांति की पहली मंजिल से दूसरी मंजिल की ओर बढ़ा जाय।

लेनिन के नेतृत्व में पार्टी तेजी से प्रगति कर रही थी और मजदूरों की व्यापक आबादी को अपने प्रभाव में ला रही थी। 24-29 अप्रैल को बोल्शेविक पार्टी की सातवीं (अप्रैल) कांन्फ्रेंस हुयी। इस कान्फ्रेंस में क्रांति के सभी बुनियादी सवालों : मौजूदा हालात, युद्ध, अस्थायी सरकार, सोवियतें, उत्पीड़ित जातियों का सवाल आदि सवालों पर नीति का निर्धारण किया गया। इस कान्फ्रेंस में ऐसे कई लोग थे जो लेनिन के विचारों और नीति से सहमत नहीं थे, उनके विचारों के अधकचरेपन व उनके ढुलमुलपन का कान्फ्रेंस में ढंग से विरोध किया गया। अप्रैल कान्फ्रेंस ने पूरी पार्टी को ऐसा रास्ता दे दिया जिस पर चलकर पार्टी सर्वहारा वर्ग को नेतृत्व देकर उसकी सत्ता कायम करने की ओर बढ़ सकती थी।

बोल्शेविकों की पार्टी कान्फ्रेंस के होने के पहले, एक ऐसी घटना घट गयी जिसने अस्थायी सरकार के चरित्र का पर्दाफाश कर उसे गम्भीर संकट में डाल दिया। अस्थायी सरकार के युद्धोन्मादी मंसूबे उजागर हो गये।

> "18 अप्रैल को अस्थायी सरकार के विदेश मंत्री मिल्यूकोव ने मित्र देशों को सूचित किया कि 'तमाम जनता विश्वयुद्ध को तब तक चालू रखना चाहती है जब तक कि निश्चित विजय न मिल जाये, और अस्थायी सरकार मित्र देशों के प्रति ली हुई अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह से निबाहेगी।' ... ...
>
> "19 अप्रैल को, मजदूरों और सैनिकों को इस बयान ("मिल्यूकोव के नोट") का पता लगा। 20 अप्रैल को, बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अस्थायी सरकार की साम्राज्यवादी नीति के खिलाफ विरोध प्रदर्शित करने के लिए कहा। 20-21 अप्रैल (3-4 मई) 1917 को, कम से कम एक लाख मजदूरों और सैनिकों ने "मिल्यूकोव के नोट" पर गुस्से में भरकर, प्रदर्शन में भाग लिया। उनके झण्डों पर ये मांगें लिखी हुयी थीं :'गुप्त संधियां प्रकाशित करो!' 'युद्ध मुर्दाबाद!', 'सारी सत्ता सोवियतों को दो!' मजदूर और सैनिक शहर के छोर से केन्द्र की तरफ चले, जहां अस्थायी सरकार की बैठक हो रही थी। नेव्स्की प्रास्पैक्ट और दूसरी जगहों पर पूंजीवादी गुटों से टक्करें हुईं।
>
> "ज्यादा खुले हुए क्रांति विरोधियों, जैसे कि जनरल कार्निलोव, ने मांग की कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चलायी जाये और इसके लिए हुक्म भी दे दिया, लेकिन सैनिकों ने हुक्म मानने से इन्कार कर दिया।
>
> ... ...
>
> " 20-21 अप्रैल की घटनाओं ने दिखला दिया कि अस्थायी सरकार का संकट शुरू हो गया है।
>
> "मेंशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों की समझौतावादी नीति में यह पहली गम्भीर फूट पड़ी।
>
> "2 मई, 1917 को, आम जनता के दबाव से मिल्यूकोव और गुचकोव अस्थायी सरकार से अलग कर दिये गये।
>
> "पहली **संयुक्त** अस्थायी सरकार बनायी गयी। पूंजीपतियों के प्रतिनिधियों के अलावा, इसमें मेंशेविक (स्कोबेलेव और त्सेरेतेली) और समाजवादी क्रांतिकारी (चरनोव, करैन्स्की वगैरह) भी थे।
>
> "इस तरह, जिन मेंशेविकों ने 1905 में ऐलान किया था कि सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रतिनिधियों के लिए **क्रांतिकारी** अस्थायी सरकार में हिस्सा लेना अनुचित है, उन्होंने अब अपने प्रतिनिधियों के लिए **क्रांति विरोधी** अस्थायी सरकार में हिस्सा लेना उचित समझा।
>
> "इस तरह मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी क्रांति विरोधी पूंजीपतियों के खेमे से जा मिले थे।" (सो.सं. की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, पृष्ठ 221-222, जोर मूल में)

अस्थायी सरकार, मेंशेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी सबके चेहरे से जैसे-जैसे आने वाले दिनों में और नकाब हटता गया वैसे-वैसे मजदूरों, किसानों और सैनिकों की उनके प्रति नफरत बढ़ती गयी। वे बोल्शेविक पार्टी के इर्द-गिर्द तेजी से इकट्ठे होने लगे। बोल्शेविकों ने इसके लिए रात-दिन एक कर दिया था। मेंशेविक और समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रभाव को खत्म करने के लिए मजदूरों, गरीब किसानों, सैनिकों की सभाओं, सम्मेलनों, रैली, कांग्रेस में बोल्शेविकों के सबसे अच्छे वक्ता बगैर थके हुए भाषण देते हुए उनके सवालों का जवाब देते और बार-बार स्थापित करते कि क्यों सारी सत्ता सोवियतों के हाथों में होनी चाहिए। क्यों समाजवादी क्रांति आवश्यक है। क्यों युद्ध की समाप्ति के लिए भी ऐसी सरकार की आवश्यकता है जो वास्तव में शान्ति चाहती हो और किसी दूसरे देश की एक इंच भूमि में भी उसकी रुचि न हो। उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के लोगों को बताया जाता कि कैसे उनकी मुक्ति हो सकती है। पार्टी के नेता लेनिन लगातार बोल्शेविकों की नीति को स्थापित करने के लिए रैलियों, सम्मेलनों, कांग्रेसों में भाषण देते।

बोल्शेविक पार्टी अपने विचारों और नीति के प्रसार के लिए विभिन्न अखबारों, पत्रिकाओं का प्रकाशन करती है। अक्टूबर माह में ऐसे अखबारों की संख्या 80 तक जा पहुंची। पर्चे-पुस्तिकाओं की संख्या हजारों में थी। प्रावदा ने इसमें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। वह विचारधारात्मक, राजनैतिक व सांगठनिक काम को कुशलतापूर्वक संचालित कर रहा था। प्रावदा के 5 (18) मार्च से लेकर 5 (18) जुलाई तक 99 अंक प्रकाशित हुए। प्रतिदिन इसकी 85000 से लेकर 100,000 प्रतियां छपतीं। कुल मिलाकर इसकी 80 लाख प्रतियां इस बीच छपीं। प्रावदा में लेनिन सहित बोल्शेविक पार्टी के नेताओं के क्रांति से सम्बंधित लेख छपते। एक-एक प्रति दर्जनों मजदूर पढ़ते। और इस तरह से वे बोल्शेविक पार्टी के साथ तेजी से जुड़ते चले जाते। अस्थायी सरकार, मेंशेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी बोल्शेविकों के बढ़ते प्रभाव से बेचैन होने लगे और वे बोल्शेविकों पर भीषण हमले, घृणित चालें चलने लगे। लेनिन और बोल्शेविक पार्टी के प्रति वे घृणा से भरे हुए थे। पार्टी, उसके नेता और प्रावदा अखबार पर हमले की साजिशें रची जाने लगी।

बोल्शेविकों की मेहनत रंग ला रही थी। देश के कई शहरों की सोवियतों में उनका बहुमत कायम हो रहा था। परन्तु उन्हें बहुत अधिक काम करने की आवश्यकता थी।

30 मई से 3 जून तक पेत्रोग्राद में मिल-कमेटियों की कान्फ्रेंस हुई। इस कान्फ्रेंस में बोल्शेविकों का बोलबाला था और "सारी सत्ता सोवियतों को दो।" कान्फ्रेंस ने इस बोल्शेविक नारे का समर्थन किया।

पेत्रोग्राद में भले ही बोल्शेविकों का बहुमत था परन्तु सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस में वे अल्पमत में थे। 3जून (16 जून) 1917 को सोवियतों की पहली अखिल रूसी कांग्रेस हुई। इस कान्फ्रेंस में बोल्शेविक पार्टी के 105, मेंशेविकों के 248 तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों के 285 प्रतिनिधि थे। इस कांग्रेस ने मेंशेविक और समाजवादी-क्रांतिकारियों के अस्थाई सरकार के समर्थन करने के प्रस्ताव को पास किया। लेनिन और अन्य बोल्शेविकों ने पूंजीपतियों से समझौता करने के भयानक नतीजों और युद्ध के साम्राज्यवादी रूप का खुलासा किया।

यह समय बोल्शेविकों के आम जनों में प्रभाव के विस्तार का काल था। इसकी एक परीक्षा क्रांति के शहीदों की समाधि पर 18 जून 1917 को एक प्रदर्शन से हो गयी। इसने अस्थायी सरकार पर प्रश्न चिह्न खड़े कर दिये।

> "क्रांति के शहीदों की समाधि पर, 18 जून 1917 का प्रदर्शन हुआ। यह प्रदर्शन बोल्शेविक पार्टी की शक्ति का सचमुच प्रदर्शन ही हुआ। उसने आम जनता की बढ़ती हुई क्रांतिकारी भावना और बोल्शेविक पार्टी में उसका बढ़ता विश्वास जाहिर किया। अस्थायी सरकार में विश्वास प्रकट करने और युद्ध जारी रखने पर जोर देने वाले मेंशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के नारे बोल्शेविक नारों के समुद्र में डूब गये। चार लाख प्रदर्शनकारी झण्डे लिए हुए थे, जिन पर ये नारे लिखे हुए थे : 'युद्ध मुर्दाबाद!' 'दसों पूंजीवादी मंत्री मुर्दाबाद!', 'सारी सत्ता सोवियतों को दो!'
>
> "मेंशेविक और समाजवादी-क्रांतिकरियों की पूरी हार हुई। देश की राजधानी में अस्थायी सरकार की हार हुई।" (पेज 228, वही)

आम जनता के विरुद्ध अस्थायी सरकार युद्ध को जारी रखने का फैसला ले रही थी। 18 जून (1 जुलाई) के दिन ही अस्थायी सरकार ने ब्रिटिश, फ्रांसीसी और अमेरिकी साम्राज्यवादियों के साथ रूसी साम्राज्यवादियों की इच्छा और सोवियत कांग्रेस के समर्थन से जर्मनों के ऊपर हमला बोल दिया। इस हमले के जरिये अस्थायी सरकार देश में पल रही समाजवादी क्रांति को गर्भ में समाप्त कर देना चाहती थी। उसने तगड़ा दांव चला जीतने की स्थिति में वह अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर लेती और हारने की स्थिति में फौज को कमजोर करने का आरोप बोल्शेविकों के मत्थे मढ़कर उनके दमन का कार्य करती।

जर्मनी पर बोला गया यह हमला असफल होने को अभिशप्त था। रूसी फौजियों के पास हथियार, गोला-बारूद की भारी कमी थी। और उसके ऊपर से उन्हें हमले का औचित्य समझ में नहीं आता था। वे अपने अफसरों के प्रति भी घोर शंकालु थे।

युद्ध के मोर्चे पर हमले और उसकी असफलता की खबर से देश की राजधानी सहित पूरे देश में आक्रोश फैल गया। अस्थायी सरकार के खिलाफ पूरे देश में उबाल आने लगा। अस्थायी सरकार एक नये संकट में फंस गयी। 3 (16) जुलाई को मजदूरों और सैनिकों के स्वत:स्फूर्त प्रदर्शन पेत्रोग्राद में शुरू हुए। प्रदर्शनकारी मांग कर रहे थे कि 'सारी सत्ता सोवियतों को दो!' बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, जिसका विचार था कि अभी क्रांति की परिस्थितियां परिपक्व नहीं हुयी हैं, ने इस प्रदर्शन को शान्तिपूर्ण और सही ढंग से संगठित करने के लिए नेतृत्व दिया।

4 (17) जुलाई को एक शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पेत्रोग्राद में हुआ। इस प्रदर्शन में पांच लाख से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। अस्थायी सरकार ने इस शान्तिपूर्ण प्रदर्शन को कुचलने का फैसला लिया। प्रतिक्रियावादी दस्ते जो कि अफसरों और कैडेटों से मिलकर बने थे, ने प्रदर्शनकारियों पर हमला बोल दिया। युद्ध के मोर्चे से भी क्रांति विरोधी दस्ते इस प्रदर्शन के दमन के लिए बुलाये गये। पेत्रोग्राद की सड़कें मजदूरों और सैनिकों के खून से लाल हो गयीं। 56 लोग मारे गये और 650 लोग घायल हो गये।

> "मजदूरों और सैनिकों के प्रदर्शन का दमन करने के बाद, पूंजीपतियों और गद्दार जनरलों के सहयोग से मेंशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों ने बोल्शेविक पार्टी पर हमला किया। प्राव्दा के प्रकाशन की जगह तोड़-फोड़ डाली गयी। प्राव्दा, सोल्दात्स्काया प्राव्दा (सैनिक सत्य) और दूसरे कई बोल्शेविक अखबार बंद कर दिये गये। ...
>
> ... ... रेड गार्ड दस्तों के हथियार छीनना शुरू हुआ। पेत्रोग्राद छावनी के क्रांतिकारी दस्ते राजधानी से हटा लिए गये और मोर्चे पर भेज दिये गये। युद्ध के मोर्चे और उसके पीछे गिरफ्तारियां हुईं। 7 जुलाई को लेनिन को पकड़ने के लिए वारण्ट जारी हुआ। बोल्शेविक पार्टी के कई प्रमुख सदस्य गिरफ्तार कर लिए गये। त्रूद छापाखाना, जहां बोल्शेविक अखबार छपते थे, नष्ट कर दिया गया।
>
> ... ...
>
> "इस तरह, संयुक्त अस्थायी सरकार ने ... ... शान्ति की नीति के बदले, उसने युद्ध चालू रखने की नीति अपनायी। जनता के जनवादी अधिकारों की रक्षा करने के बदले, उसने इन अधिकारों को खत्म करने और हथियारों की ताकत से मजदूरों और सैनिकों का दमन करने की नीति अपनायी।
>
> "पूंजीपतियों के प्रतिनिधि गुचकोव और मिल्यूकोव जो कुछ करने में हिचकिचाते थे, उसे करैन्स्की और त्स्रेतेली, चेर्नोव और स्कोबेलेव जैसे 'समाजवादियों' ने कर दिखाया।
>
> "दुहरी सत्ता खत्म हो गयी।
>
> "वह खत्म हुई पूंजीपतियों के हित में, क्योंकि सारी सत्ता अस्थायी सरकार के हाथ में आ गयी और सोवियतें, अपने समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं के साथ, अस्थायी सरकार का पुच्छल्ला बन गयी थीं।
>
> "क्रांति का शान्तिमय दौर खत्म हो चुका था ... ... " (पेज 229-230, वही)

क्रांति के शान्तिमय दौर के खत्म होने के साथ ही बोल्शेविक पार्टी ने अपनी कार्यनीति बदल ली। खुले और गुप्त काम में माहिर बोल्शेविक पार्टी ने भूमिगत होने का फैसला ले लिया। और वह विद्रोह की तैयारियों में लग गयी।

सशस्त्र विद्रोह की तैयारी के लिए बोल्शेविक पार्टी अपनी छठी कांग्रेस बुलाती है। कांग्रेस गुप्त रूप से 26 जुलाई से 3 अगस्त 1917 में पेत्रोग्राद में होती है। इस कांग्रेस तक पार्टी सदस्यों की संख्या 240,000 पहुंच चुकी होती है।

छठी कांग्रेस के सभी फैसलों का उद्देश्य सर्वहारा वर्ग और गरीब किसानों को सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयार करना था। छठी कांग्रेस ने पार्टी को सशस्त्र विद्रोह और समाजवादी क्रांति के कार्यभार को अंजाम देने के लिए पूरी तरह से तैयार कर दिया।

सत्ता के लिए वर्गों और पार्टियों का संघर्ष रोज-ब-रोज तीखा होता जा रहा था। बोल्शेविक जैसे ही अपनी पार्टी कांग्रेस को सम्पन्न करके उठे वैसे ही देश में छाये राजनीतिक संकट ने एक नया मोड़ ले लिया। बुर्जुआ और निम्न बुर्जुआ पार्टियां, जो कि अपना आधार तेजी से खोती जा रही थीं, बोल्शेविकों के बढ़ते आधार से चिन्तित थीं। और सबसे ज्यादा चिन्तित, परेशान कैडेट पार्टी के रहनुमा और रूसी साम्राज्यवादियों के सहयोगी फ्रांसीसी, ब्रिटिश और अमेरिकी साम्राज्यवादी थे। रूस में सैन्य तानाशाही लागू करने का षड्यंत्र रचा जा रहा था। सभी वर्ग, पार्टियां अपने-अपने ढंग से तैयारियां कर रही थीं।

अगस्त माह के शुरू में जनरल एल.जी. कार्निलोव, जो जुलाई 18 (31) से सेना का प्रधान सेनापति था, ने अपना षड्यंत्र शुरू किया।

12 से 15 (25-28) अगस्त को मास्को के बड़े नाटकघर में अस्थायी सरकार ने राज्य समिति की बैठक बुलाई। इस बैठक का उद्देश्य पूरे रूस की प्रतिक्रियावादी व क्रांति विरोधी ताकतों को एकजुट करना था ताकि बची-खुची सोवियतों को नष्ट कर खुली सैन्य तानाशाही लागू की जाय। कार्निलोव, करैन्स्की, रियावुशिन्स्की (करोड़पति), कालिदिन, मिल्यूकोव, रोद्जियांको यानी जमींदार, पूंजीपति, जनरल आदि सभी शामिल थे।

बोल्शेविकों ने इस राज्य समिति की बैठक के खिलाफ मास्को में आम हड़ताल का आह्वान किया। आम हड़ताल का उद्देश्य क्रांति विरोधी, प्रतिक्रियावादी तत्वों के षड्यंत्र का मुंहतोड़ जवाब देना था। इस हड़ताल में चार लाख लोगों ने भागीदारी की। कीव, खारकोव, निज्नी नोवोर्गोद आदि शहरों में बड़े प्रदर्शन आयोजित हुए।

"क्रांति विरोधी जनरल कार्निलोव ने सीधे-सीधे मांग की कि 'कमेटी और सोवियतें खत्म कर दी जायें'।

"बैंक-साहूकार, सौदागर और कारखानेदार कार्निलोव के जरनल हेडक्वार्टर पर इकट्ठे होने लगे और उसे धन और मदद देने का वायदा करने लगे।

"'मित्र देशों', ब्रिटेन और फ्रांस के प्रतिनिधि भी जनरल कार्निलोव के पास आये और मांग की कि क्रांति के खिलाफ कदम उठाने में देर न की जाये। ... ...

"कार्निलोव ने खुल्लमखुल्ला अपनी तैयारी की। लोगों का ध्यान बंटाने के लिए, षड्यंत्रकारियों ने यह अफवाह फैला दी कि बोल्शेविक विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं जो पेत्रोग्राद में 27 अगस्त को-क्रांति के छः महीनों के बाद-होगा। करैन्स्की के नेतृत्व में अस्थायी सरकार ने खूंख्वार तरीके से बोल्शेविकों पर हमला किया ... ...। इसके साथ ही, जरनल कार्निलोव ने फौज इकट्ठी की, जिससे कि उसे पेत्रोग्राद के खिलाफ ले जा सके, सोवियतें खत्म करे और एक फौजी डिक्टेटरशिप कायम करे।

"अपने इस क्रांति विरोधी काम के लिए, कार्निलोव पहले ही करैन्स्की से समझौता कर चुका था। लेकिन जैसे ही कार्निलोव का काम शुरू हुआ वैसे ही करैन्स्की ने अचानक पैंतरा बदला और अपने दोस्त से अलग हो गया।

... ...

"25 अगस्त को, कार्निलोव ने जरनल किमोव की कमान में तीसरे घुड़सवार दस्ते को पेत्रोग्राद के खिलाफ भेजा और ऐलान कर दिया कि वह 'पितृभूमि की रक्षा' करना चाहते हैं। कार्निलोव -विद्रोह देखकर बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने मजदूरों और किसानों को बुलावा दिया कि वे क्रांति विरोध का सक्रिय रूप से हथियारबंद विरोध करें। मजदूर जल्दी-जल्दी हथियारबंद होने लगे और मुकाबिले की तैयारी में लग गये। उन दिनो, रेड गार्ड दस्ते भारी तादाद में बने। ट्रेड यूनियनों ने अपने सदस्यों को बटोरा। पेत्रोग्राद के क्रांतिकारी फौजी दस्ते लड़ाई के लिए तैयार रखे गये। पेत्रोग्राद के चारों तरफ खाइयां खोद दी गयीं, कंटीले तारों की जाली लगा दी गई और शहर की तरफ आने वाली रेलों की पटरियां उखाड़ डाली गयीं। शहर की रक्षा करने के लिए, कई हजार हथियारबंद मल्लाह क्रोन्स्तात से आये। पेत्रोग्राद की तरफ बढ़ने वाली 'खूख्वार पलटन' के पास प्रतिनिधि भेजे गये। 'खूंख्वार पलटन' में काकेशस के पहाड़ी लोग थे। जब प्रतिनिधियों ने कार्निलोव की कार्यवाही का उद्देश्य उन्हें समझाया, तो उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। कर्निलोव के दूसरे दस्तों के लिए भी प्रचारक भेजे गये। जहां भी खतरा था कार्निलोव से लड़ने के लिए क्रांतिकारी समितियां और हेडक्वार्टर बनाये गये।

"उन दिनों, अपनी जान के लिए बुरी तरह से डरे हुए समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविक नेता, जिनमें करैन्स्की भी था, बोल्शेवकिों से जान बचाने की प्रार्थना करने लगे। उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि राजधानी में बोल्शेविक ही एक समर्थ शक्ति हैं, जो कार्निलोव को हरा सकते हैं।

"लेकिन, कार्निलोव-विद्रोह को कुचलने के लिए आम जनता को बटोरते हुए, बोल्शेविकों ने कैरेन्स्की हुकूमत के खिलाफ अपना संघर्ष बंद नहीं किया। उन्होंने आम जनता के सामने करैन्स्की सरकार, मेंशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों का पर्दाफाश किया ... ...

"इन उपायों का फल यह हुआ कि कार्निलोव -विद्रोह दबा दिया गया। जरनल क्रिमोव ने आत्महत्या कर ली। कार्निलोव और उनके साथी षड्यंत्रकारी देनीकिन और लुकोम्स्की गिरफ्तार कर लिए गये।

... ...

"कार्निलोव-विद्रोह की हार ने पलभर में दिखला दिया कि क्रांति और क्रांति विरोध की ताकत कितनी-कितनी है। ...

... ...

"कार्निलोव-विद्रोह की हार ने यह भी दिखला दिया कि बोल्शेविक पार्टी क्रांति की निर्णायक शक्ति बन चुकी है। ...

... ...

"अंत में कार्निलोव -विद्रोह की हार ने दिखला दिया कि ऊपर से मुर्दा दिखने वाली सोवियतों में दरअसल क्रांतिकारी प्रतिरोध करने की भारी शक्ति छिपी हुई है। ... ...

"कार्निलोव के खिलाफ संघर्ष ने मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की मुरझायी हुई सोवियतों में नयी जान डाल दी। ... ...

"सोवियतों में बोल्शेविकों का असर पहले से भी ज्यादा बढ़ गया।

"देहात के जिलों में उनका असर तेजी से बढ़ा।" ... ...

... (पेज 237-239, वही)

कार्निलोव-विद्रोह को सफलतापूर्वक निपटाने से बोल्शेविक पार्टी की प्रतिष्ठा बढ़ती गयी। मजदूरों और सैनिकों की व्यापक आबादी पहले ही बोल्शेविकों के साथ थी अब गरीब किसान भी उनके साथ खड़े होने लगे। किसानों का ढुलमुल पन खत्म होने लगा। उनके ढुलमुलपन ने ही क्रांति के विकास को अप्रैल से अगस्त तक रोका हुआ था। गरीब किसानों को समझ में आने लगा कि बोल्शेविक ही उनकी शांति और जमीन की मांग को पूरा कर सकते हैं। इसके साथ कार्निलोव विद्रोह में जिस ढंग से सोवियतें सक्रिय हुयीं वे अब प्रभावकारी भूमिका में आ गयीं।

31 अगस्त को कार्निलोव की शिकस्त के अगले दिन 1 सितम्बर को पेत्रोग्राद की सोवियत में बोल्शेविकों का प्रभाव स्थापित हो गया। पेत्रोग्राद की सोवियत के सभापति मण्डल ने इस्तीफा दे दिया। इस सोवियत में मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी जमे हुए थे। इसी तरह मास्को सोवियत से भी क्रांति विरोधी तत्वों का सफाया हो गया।

पेत्रोग्राद और मास्को सोवियतों पर बोल्शेविकों का नेतृत्व कायम हो गया। 'सारी सत्ता सोवियतों को दो' नारे को अब फिर से कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया। पूरे देश में क्रांतिकारी माहौल तैयार होता जा रहा था।

ऐसे में, क्रांति के ज्वार को दबाने के लिए मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी एक और प्रयास करते हैं। वे 12 सितम्बर 1917 को एक अखिल रूसी प्रजातांत्रिक सम्मेलन बुलाते हैं। इस सम्मेलन में मेंशेविक, समाजवादी क्रांतिकारियों के अलावा सोशलिस्ट पार्टियां, समझौतावादी सोवियतें, ट्रेड यूनियनें, जेम्स्त्वों, व्यापारी, फौजी दस्तों के प्रतिनिधि आदि शामिल हुए थे। सम्मेलन में प्रजातंत्र की एक अस्थायी समिति बनायी गयी जिसे 'प्रेद पार्लियामेन्ट' (पार्लियामेन्ट से पूर्व, प्री पार्लियामेन्ट) नाम दिया गया। इस पार्लियामेन्ट का काम पूंजीवादी विधान बनाना व पूंजीवादी संसद कायम करना था।

बोल्शेविकों ने इस 'प्रेद पार्लियामेन्ट' का बायकाट कर दिया। उन्होंने इसके उल्टे सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस 19 अक्टूबर को बुलायी। देश समाजवादी क्रांति की दहलीज पर पहुंच चुका था।

पूरे देश में क्रांतिकारी संकट की स्थिति थी। पूंजीवादी संयुक्त अस्थायी सरकार ने देश को ऐसी जगह में धकेल दिया था जहां अब उसकी समस्याओं का समाधान पूंजीवादी दायरे में किसी भी तरह संभव नहीं था। युद्ध के खर्चों से देश की अर्थव्यवस्था चरमरा चुकी थी। 1917 में सकल औद्योगिक उत्पादन 1916 के मुकाबले 36.4 प्रतिशत गिर चुका था। पूरे देश में मार्च से अक्टूबर 1917 के बीच 800 उपक्रम बंद हो चुके थे। कोयला, तेल, कच्चे लोहे, स्टील का उत्पादन तेजी से गिर चुका था। बेरोजगारी तेजी से फैल रही थी। रूस के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र में शामिल यूराल, दोन्बास के अलावा अन्य औद्योगिक केन्द्रों में पचास फीसदी उद्योग बंद होने से स्थिति और खराब हो गयी थी। मजदूरों की वास्तविक तनख्वाहें 1913 के मुकाबले 40 से 50 फीसदी गिरने से जीवनयापन मुश्किल हो गया था। व्यापक आबादी भुखमरी के कगार पर खड़ी थी।

देश की वित्तीय स्थिति दयनीय थी दिवालियेपन का खतरा मंडराने लगा था। खर्चों को पाटने के लिए कागजी मुद्रा बेशुमार ढंग से छापी जा रही थी और सरकार पर विदेशी कर्ज बढ़ता जा रहा था। पहले विश्व युद्ध शुरू होने से लेकर फरवरी 1917 तक 8.2 अरब की मुद्रा प्रचलन में थी परन्तु फरवरी से लेकर अक्टूबर तक 9.5 अरब की कागजी मुद्रा प्रचलन (circulation) में थी। 1917 की नयी कागजी मुद्रा में 65 फीसदी तो मात्र सरकार के अपने बजट खर्च के लिए थी। सरकार का कर्ज 50 अरब रूबल तक जा पहुंचा था। इस कर्ज में एक हिस्सा करीब 11.2 अरब रूबल का विदेशी सरकारों का ऋण था। कागजी मुद्रा के लगातार छापे जाने से देश में मुद्रास्फीति अभूतपूर्व स्थिति तक पहुंच गयी।

इस सबके बीच में मजदूर वर्ग बोल्शेविकों के नेतृत्व में तेजी से संगठित हुआ था। फैक्टरियों, औद्योगिक संस्थानों में हर स्थान पर फैक्टरी कमेटियां गठित हो रही थीं। अक्टूबर 1917 तक 20 लाख से अधिक फैक्टरी मजदूर और कर्मचारी ट्रेड यूनियनों में संगठित थे। जैसा कि फरवरी से अक्टूबर तक के घटनाक्रम से स्पष्ट है कि मजदूर वर्ग ने अपनी पार्टी की अगुवाई में क्रांति को एक मंजिल से दूसरी मंजिल में पहुंचा दिया था।

मजदूर वर्ग के संघर्षों ने किसानों खास तौर पर गरीब किसानों के आंदोलन को भी नयी गति दी थी। फरवरी से अक्टूबर 1917 तक जमींदारों के खिलाफ 4,250 किसान विद्रोह की घटनाएं हुयीं। इनमें से सिर्फ सितम्बर और अक्टूबर माह में ही 1300 घटनाएं हुयीं। यह इस बात का द्योतक है कि किस तरह से किसान तेजी से समाजवादी क्रांति की ओर खिंचे चले आ रहे थे। बोल्शेविकों का प्रभाव किसानों पर अगस्त-सितम्बर माह के बाद बढ़ता ही चला गया था।

इसी तरह देश में उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं का मुक्ति आंदोलन भी गति पकड़ रहा था। समाजवादी क्रांति ही देश की समस्याओं का समाधान कर सकती थी ऐसा विश्वास मजदूरों, गरीब किसानों, सैनिकों, उत्पीड़ितों सभी के मन में घर कर गया था।

मार्च से अक्टूबर तक बोल्शेविक पार्टी की सदस्यता में कई गुने की वृद्धि हो चुकी थी। पार्टी का विस्तार पूरे देश में युद्ध के मोर्चों सहित सभी जगह हो रहा था। रूस के प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों : पेत्रोग्राद, मास्को सहित जहाजियों के बीच इन महीनों में नये पार्टी सदस्य भर्ती हुए थे।

इस तरह से देखा जाय तो बोल्शेविक पार्टी की सांगठनिक ताकत ऐसी थी कि वह रूस जैसे विशाल देश में क्रांति के काम को सही और अच्छे ढंग से अन्जाम दे सकती थी। पार्टी सशस्त्र विद्रोह को नेतृत्व देने में पूर्णतया सक्षम थी। उसके पास_लेनिन जैसा कुशल नेतृत्व था उसका मजदूरों और किसानों में व्यापक काम था और उसके पास दो क्रांतियों का ठोस अनुभव था।

लेनिन ने अक्टूबर क्रांति के लिए बोल्शेविक पार्टी को काफी समय पहले ही पूर्णरूप से तैयार कर लिया था। पार्टी के भीतर के समपर्णवादी अलग-थलग पड़ चुके थे। पार्टी मनुष्य जाति के इतिहास में एक नये युग 'सर्वहारा क्रांतियों के युग' का प्रारम्भ करने की घड़ी में पहुंच चुकी थी।

V

महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय

मास्को और पेत्रोग्राद की मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें जैसे ही बोल्शेविकों के हाथों में आ गयी वैसे ही लेनिन ने कहा कि अब वक्त आ गया है बोल्शेविक सत्ता अपने हाथ में लें। पूरे सितम्बर माह बोल्शेविकों ने विद्रोह की खूब तैयारियां की। इन तैयारियों को तेज करने के लिए लेनिन फिनलैण्ड से पेत्रोग्राद गुप्त रूप से आ गये।

7 अक्टूबर को लेनिन के पेत्रोग्राद आने के बाद 10 अक्टूबर को पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक बैठक हुयी। इस बैठक में अगले कुछ दिनों में सशस्त्र विद्रोह करने का फैसला लिया गया। लेनिन ने बैठक में बताया कि हमें विद्रोह की किस तरह से तैयारी करनी चाहिए। केन्द्रीय समिति की बैठक में लेनिन के नेतृत्व में एक पोलित ब्यूरो बनाया गया।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने पेत्रोग्राद सोवियत को एक क्रांतिकारी फौजी कमेटी (Military Revolutionary Committee-MRC) बनाने का निर्देश दिया। यह संस्था विद्रोह का संचालन करने वाला कानूनी हेड क्वार्टर बन गयी।

16 अक्टूबर को, केन्द्रीय समिति की एक विस्तृत बैठक में विद्रोह के संचालन के लिए एक पार्टी केन्द्र चुना गया। इस पार्टी केन्द्र का काम पेत्रोग्राद सोवियत की क्रांतिकारी फौजी कमेटी (एम.आर.सी.) को नेतृत्व देने के साथ समूचे विद्रोह का संचालन करना था।

अक्टूबर में सशस्त्र विद्रोह करने के लिए पार्टी के पास एक मजबूत सशस्त्र सेना थी। इस सेना के हिरावल पेत्रोग्राद रेड गार्ड्स थे। पेत्रोग्राद रेड गार्ड्स में 40,000 लड़ाके थे। इन्हें छोड़कर रूस के अन्य शहरों में मिलाकर 200,000 रेड गार्ड्स थे।

विद्रोह के प्रारम्भ में क्रांतिकारी सैनिकों की पेत्रोग्राद गैरीसन में संख्या 150,000 से अधिक थी। इसी तरह बोल्शेविकों के पक्ष में खड़े बाल्टिक फ्लीट के 80,000 सैनिक थे। इसी तरह कई लाख सैनिक जो मोर्चों खास तौर से उत्तरी व पश्चिमी में लड़ रहे थे, क्रांति का समर्थन करते थे।

एक तरफ क्रांतिकारी अपनी ताकत को बटोर और विद्रोह के हिसाब से जरूरी जगहों पर तैनाती कर रहे थे तो क्रांति विरोधी भी जल्दी-जल्दी अपने फौज, लड़ाकू दस्तों को इकट्ठा कर क्रांति विरोधी हेडक्वार्टर कायम कर रहे थे। अक्टूबर में क्रांति विरोधियों के 43 लड़ाकू दस्ते बन गये। उन लोगों के खास दस्ते बने जो सेण्ट जॉर्ज के क्रॉस को मानते थे।

करैन्स्की ने इस बीच अपनी सरकार को पेत्रोग्राद से मास्को ले जाने का षड्यंत्र रचा ताकि पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले हो जाने दे। पेत्रोग्राद के मजदूरों और सैनिकों ने अस्थायी सरकार को पेत्रोग्राद को नहीं छोड़ने दिया।

16 अक्टूबर की केन्द्रीय समिति की बैठक में जिनोवियेव और कामेनेव ने एक बार फिर विद्रोह का विरोध किया। इन समर्पणवादियों ने इससे भी ज्यादा घटिया काम ये किया कि उन्होंने 18 अक्टूबर को मेंशेविकों के अखबार में बोल्शेविक विद्रोह की तैयारी का खुलासा कर दिया।

> "गद्दारों से चेतावनी पाकर, क्रांति के दुश्मन तुरंत ही इस बात के उपाय करने लगे कि विद्रोह को रोक दें और क्रांति के संचालक दल-बोल्शेविक पार्टी-का नाश कर दें। अस्थायी सरकार ने एक गुप्त बैठक बुलायी, जिसमें बोल्शेविकों का मुकाबिला करने के लिए क्या उपाय किये जायें, इसका फैसला हुआ। 19 अक्टूबर को, अस्थायी सरकार ने युद्ध के मोर्चे से जल्दी-जल्दी फौजें पेत्रोग्राद बुलायी। सड़कों पर भारी पहरा लगा दिया गया। क्रांति विरोधी खास तौर से मास्को में भारी फौज इकट्ठी करने में कामयाब हुए। अस्थायी सरकार ने एक योजना बनायी कि सोवियतों की दूसरी कांग्रेस शुरू होने से पहले बोल्शेविक केन्द्रीय समिति के हेडक्वार्टर स्मोल्नी पर हमला किया जाय और उस पर कब्जा कर लिया जाये और बोल्शेविक संचालन केन्द्र का नाश कर दिया जाय। इसी उद्देश्य से, हुकूमत ने पेत्रोग्राद में वह फौज बुलाई जिसकी वफादारी पर उसे भरोसा था।

"लेकिन, अस्थायी सरकार की जिन्दगी के दिन और घण्टे भी गिनती के रह गये थे। समाजवादी क्रांति की विजय यात्रा को अब कोई भी न रोक सकता था।

"21 अक्टूबर को, बोल्शेविकों ने सभी क्रांतिकारी फौजी दस्तों के पास क्रांतिकारी फौजी समिति के कमिसार भेजे। विद्रोह होने के पहले के बचे हुए दिनों में फौजी दस्तों, मिलों और कारखानों में कार्यवाही की जोरदार तैयारी की गयी। युद्धपोत **अरोरा** और **जारियास्वाबोदि** के लिए भी निश्चित निर्देश भेजे गये।

"पेत्रोग्राद-सोवियत की एक बैठक में, त्रात्स्की ने डींग हांकने की जोश ... ... में दुश्मन को वह तारीख बतला दी जबकि बोल्शेविक सशस्त्र विद्रोह शुरू करने वाले थे। करैन्स्की सरकार विद्रोह को असफल न कर दे, इसलिए पार्टी की केन्द्रीय समिति ने फैसला किया कि निश्चित किये हुए समय से पहले ही विद्रोह शुरू कर दिया जाये और आखिरी मंजिल तक ले जाया जाये। उसने विद्रोह की तारीख सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के शुरू होने से पहले के दिन रखी।

"24 अक्टूबर (6 नवम्बर) को सुबह तड़के करैन्स्की ने हमला शुरू कर दिया। उसने बोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय पत्र **रबोचीपूत (मजदूर पथ)** को बंद करने का हुक्म दिया और सम्पादकीय दफ्तर और बोल्शेविकों के छापेखाने पर हथियार बंद गाड़ियां भेजीं। लेकिन 10 बजे सबेरे तक कामरेड स्तालिन के निर्देश पर, रेडगार्डों के दस्तों और क्रांतिकारी सैनिकों ने हथियारबंद गाड़ियों को पीछे ठेल दिया और छापेखाने और **रबोचीपूत** के सम्पादकीय दफ्तरों पर और ज्यादा पहरा बिठा दिया। लगभग 11 बजे सबेरे **रबोचीपूत** प्रकाशित हुआ, जिसमें अस्थायी सरकार का तख्ता उलट देने के लिए आह्वान था। उसी समय, विद्रोह के पार्टी केन्द्र के निर्देश से क्रांतिकारी सैनिकों और रेडगार्डों के दस्ते स्मोल्नी की तरफ दौड़ाये गये।

"विद्रोह शुरू हो गया।

"24 अक्टूबर की रात को, लेनिन स्मोल्नी आ पहुंचे और उन्होंने खुद विद्रोह के संचालन का भार संभाला। उस रात भर फौज के क्रांतिकारी दस्ते और रेडगार्डों के जत्थे बराबर स्मोल्नी आते रहे। बोल्शेविकों ने शरद प्रासाद घेरने के लिए, जहां अस्थायी सरकार ने अपना अड्डा बनाया था, उन्हें राजधानी के केन्द्र की तरफ भेजा।

"25 अक्टूबर (7 नवम्बर) को रेड गार्डों के दस्तों और क्रांतिकारी सैनिकों ने रेलवे स्टेशनों, डाकखानों, तारघरों, मंत्री गृहों और राज्य बैंक पर कब्जा कर लिया।

"**प्रेद पार्लियामेंन्ट** भंग कर दी गयी। ... ...

"पेत्रोग्राद के मजदूरों ने उन दिनों दिखला दिया कि बोल्शेविक पार्टी की देख-रेख में उन्होंने कैसी महान शिक्षा पायी है। फौज के क्रांतिकारी दस्तों ने, जिन्हें बोल्शेविकों के काम ने विद्रोह के लिए तैयार किया था, नपे-तुले ढंग से लड़ाई की आज्ञाओं का पालन किया और वे रेड गार्डों के दस्तों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़े। जल-सेना फौज से पीछे न रही। क्रोन्स्तात बोल्शेविक पार्टी का गढ़ था और बहुत दिन पहले ही अस्थायी सरकार का प्रभुत्व मानने से इन्कार कर चुका था। युद्ध पोत **अरोरा** ने अपनी तोपें शरद् प्रासाद की तरफ मोड़ दी और, 25 अक्टूबर को उनकी घन गरजन ने एक नया युग आरम्भ किया, महान समाजवादी क्रांति का युग आरम्भ किया। " (वही, पेज 244-246)

25 अक्टूबर (7 नवम्बर) को "रूस के नागरिकों के नाम!" से एक पत्र जारी किया गया। इसमें कहा गया था,

"रूस के नागरिकों के नाम!

"अस्थायी सरकार का तख्ता उलट दिया गया है। राज्य सत्ता मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के निकाय के-सैनिक-क्रांतिकारी समिति के, जो पेत्रोग्राद के सर्वहारा वर्ग तथा गैरिसन की अगुवाई कर रही है-हाथों में पहुंच चुकी है।

"ध्येय की, जिसके लिए जनता लड़ी है : जनवादी शान्ति का अविलम्ब प्रस्ताव, जमीन पर जमींदारों के स्वामित्व का उन्मूलन, उत्पादन पर मजदूरों का नियंत्रण तथा सोवियत सत्ता का गठन, इस ध्येय की सिद्धि हो चुकी है।

"मजदूरों, सैनिकों तथा किसानों की क्रांति जिंदाबाद!

मजदूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की

पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक-क्रांतिकारी समिति"

25 अक्टूबर, 1917

10 बजे प्रातः काल

(लेनिन, पेज 358 सं.र. दस खण्डों में खण्ड -7, वही प्रगति प्रकाशन मास्को)

25 अक्टूबर की रात को क्रांतिकारी मजदूरों, सैनिकों और जहाजियों ने शरद प्रासाद जहां अस्थायी सरकार छुपी हुयी थी पर हमला बोलकर उस पर कब्जा कर लिया। अस्थायी सरकार को गिरफ्तार कर लिया गया।

पेत्रोग्राद पूरी तरह से बोल्शेविकों के कब्जे में आ गया। सशस्त्र विद्रोह कामयाब हो गया था और सत्ता पेत्रोग्राद सोवियत के हाथ में थी।

25 अक्टूबर की रात 10 बजकर 45 मिनट पर स्मोल्नी में सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस शुरू हुयी। कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुमत कायम हुआ। मेंशेविक, समाजवादी क्रांतिकारी, बुन्दवादी तथा अन्य दक्षिणपंथी कांग्रेस में अलग-थलग पड़ चुके थे। उनकी सारी चालें नाकामयाब हो चुकी थीं। वे कांग्रेस से बाहर यह कहते हुए चले गये कि अक्टूबर क्रांति एक फौजी षड्यंत्र था। गद्दारों ने अपना वास्तविक चरित्र दिखा दिया था। अपने इस चरित्र के अनुरूप ही उन्होंने सोवियत सत्ता के खिलाफ अगले कई महीनों तक कुत्सित से कुत्सित षड्यंत्र रचे। गद्दारों के चले जाने के बाद वह सच्ची क्रांतिकारी कांग्रेस हो गयी।

26 अक्टूबर (8 नवम्बर) की रात में इस कांग्रेस में 'शांति सम्बन्धी आज्ञा-पत्र' स्वीकारा गया। इसमें युद्ध करने वाले देशों से कम से कम तीन महीनों के लिए युद्ध बन्द करने की अपील की गयी ताकि शान्ति की बातचीत की जा सके।

शान्ति सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार करने के बाद कांग्रेस ने 'भूमि सम्बन्धी आज्ञा-पत्र' के जरिये जमींदारों, जार के खानदान, धार्मिक मठों की जमीन को किसानों मे बांट दिया। किसानों को अक्टूबर समाजवादी क्रांति से 15 करोड़ देसियातिन (40 करोड़ एकड़ से अधिक) जमीन मिली।

इस 'आज्ञा पत्र' के जरिये जमींदारों से जमीन छीन लेने के अलावा किसानों को उस लगान से भी मुक्त कर दिया गया जो वे जमींदारों को हर वर्ष देते थे। यह लगान क्रांति के पूर्व वर्ष तक 50 करोड़ रूबल प्रतिवर्ष था।

इस 'आज्ञा-पत्र' में जमीन पर व्यक्तिगत मालिकाने को समाप्त कर उस पर सार्वजनिक या राज्य का मालिकाना कायम कर दिया गया। जमीन की खरीद-फरोख्त पर पाबन्दी लगा दी गयी। साथ ही तेल, कोयला, धातु जैसे खनिज पदार्थों के सभी साधन, जंगल और जलाशय जनता की सम्पत्ति घोषित कर दिये गये।

पहली सोवियत सरकार बनाने के साथ यह ऐतिहासिक कांग्रेस सम्पन्न हुयी। 'मजदूरों और किसानों की सरकार के गठन के बारे में निर्णय' में कहा गया था,

> "संविधान सभा के बुलाये जाने तक देश का शासन-प्रबंध करने के लिए मजदूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार का गठन किया जाये, जिसका नाम जन-कमिसार परिषद हो। राजकीय जीवन की पृथक-पृथक शाखाओं का संचालन-कार्य आयोगों को सौंपा जाता है, जिसके सदस्यों को पुरुष तथा महिला मजदूरों, नौसैनिकों, सैनिकों किसानों और दफ्तर कर्मचारियों के जन-संगठनों के साथ घनिष्ठ रूप से ऐक्यबद्ध होकर कांग्रेस द्वारा घोषित कार्यक्रम की पूर्ति सुनिश्चित करनी होगी। सरकारी सत्ता इन आयोगों के अध्यक्षों के मंडल के, याने जन-कमिसार परिषद के पास होगी।
>
> "जन-कमिसारों के कार्यकलाप पर नियंत्रण का कार्य तथा उन्हें बदलने का अधिकार मजदूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस और उसकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति को सौंपा जाता है।" (लेनिन, 'मजदूरों और किसानों की सरकार के गठन के बारे में निर्णय', पेज 376, पैरा 2 व 3, खण्ड 7, वही)

इस जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष लेनिन चुने गये।

कांग्रेस के सम्पन्न होते ही कांग्रेस के प्रतिनिधि पूरे देश में फैल गये ताकि पूरे देश में पेत्रोग्राद में सोवियतों की जीत का समाचार फैलाते हुए सारे देश में सत्ता सोवियतों के हाथ में आ जाये।

पूरे देश में सोवियतों के हाथ सत्ता आने में एक समय लगा। पेत्रोग्राद के बाद मास्को नया रणस्थल बना। मास्को में सत्ता सोवियतों के हाथ में आने में कई दिन लगे। क्रांति विरोधी मेंशेविक, समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी, कैडेटों ने मिलकर मजदूरों और सैनिकों के खिलाफ हथियार बंद संघर्ष छेड़ दिया। मजदूरों और सैनिकों ने इन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया। लम्बे भीषण संघर्ष के बाद ही सत्ता मास्को-सोवियत के हाथ में आयी।

बोल्शेविक पूरे देश में सत्ता सोवियतों के हाथ में आये इसके लिए जमकर संघर्ष कर रहे थे। यह संघर्ष कई महीने चला। लेनिन ने अक्टूबर 1917 से फरवरी 1918 के काल को सोवियत सत्ता की 'विजय यात्रा' कह कर सम्बोधित किया। सोवियत क्रांति इसी काल में तेजी से फैली और देश के विशाल प्रदेशों में सोवियत सत्ता कायम हुयी थी।

इस पूरे दौरान लेनिन लगातार बोल्शेविक पार्टी को संघर्ष के हर मोर्चे पर नेतृत्व दे रहे थे। विशाल जनगण को सोवियत सत्ता के पक्ष में लाने के लिए जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष के रूप में वे मजदूरों, सैनिकों, किसानों को क्रांतिकारी नेतृत्व दे रहे थे। 5 नवम्बर 1917 को अपने एक ऐसे ही सम्बोधन में उन्होंने अपील करते हुए कहा,

> "मजदूर, सैनिक, किसान तथा समस्त मेहनतकश साथियो! **सारी** सत्ता अपनी सोवियतों के हाथों में ले लीजिये। जमीन, अनाज, कारखानों, औजारों, उत्पादों, परिवहन पर नजर रखिये, अपनी आंखों की पुतलियों की तरह उनकी हिफाजत कीजिये- अब से ये सब **पूरी तरह** आपकी सार्वजनिक संपत्ति है। धीरे-धीरे, किसानों की बहुसंख्या की सहमति तथा उनके अनुमोदन से, उनके और मजदूरों के **व्यावहारिक** अनुभव से निदेशित होते हुए हम दृढ़तापूर्वक तथा अडिगतापूर्वक समाजवाद की विजय की ओर बढ़ेंगे, जो सर्वाधिक सभ्य देशों के मजदूरों द्वारा सुदृढ़ बनायी जायेगी और जो जनगण को स्थायी शांति प्रदान करेगी तथा उन्हें सब तरह के उत्पीड़न तथा सब तरह के शोषण से छुटकारा दिलायेगी।" (लेनिन, 'आबादी के नाम', पेज 382, पैरा 2, वही)

सोवियत सत्ता स्थापित करने में जहां बोल्शेविकों के नेतृत्व में मजदूरों, सैनिकों ने अपने प्राण की बाजी लगायी हुयी थी वहां क्रांतिविरोधी भी हरचन्द कोशिश कर रहे थे कि सत्ता किसी भी तरह से सोवियतों के हाथ में न जाये।

10 नवम्बर, 1917 को करैन्स्की ने पेत्रोग्राद पर हमले और कब्जे की कोशिश की। इसके लिए उसने कई कज्जाक दस्ते इकट्ठे करके जनरल क्रासनोव के नेतृत्व में भेजे। पेत्रोग्राद में कब्जे करने के उनके मंसूबे परवान न चढ़ सके। 13 नवम्बर को जनरल क्रासनोव को पुतिकोवो पहाड़ियों के पास हरा दिया गया। क्रासनोव को गिरफ्तार कर लिया गया।

नवम्बर को समाजवादी क्रांतिकारियों ने 'पितृभूमि और क्रांति के उद्धार की कमेटी' बनाकर कैडेटों के जरिये एक बगावत करायी। नवम्बर की शाम तक जहाजियों और रेड गार्डों के दस्तों ने कैडेट विद्रोह को कुचल दिया। सोवियत सत्ता के खिलाफ इसी तरह अन्य बगावत फौज के जनरल हेडक्वार्टर के प्रधान सेनापति दुखोनिन ने की। इस क्रांति विरोधी जनरल हेडक्वार्टर को सख्ती से तोड़ दिया गया। जनरल दुखोनिन सोवियत सत्ता के आदेशों को मानने से लगातार इन्कार कर रहा था। दुखोनिन को अंत में उसके खिलाफ विद्रोह करने वाले सैनिकों ने ही मार डाला।

क्रांति विरोधियों की साजिशों को लगातार नाकाम करते हुए समाजवादी क्रांति आगे बढ़ती गयी। समाजवादी क्रांति ने इस तरह मानव जाति के इतिहास में एक नये युग 'सर्वहारा क्रांतियों के युग' का सूत्रपात कर दिया।

महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति ने पूरी दुनिया के मजदूर वर्ग को जागृत कर दिया। इसके प्रभाव में जहां पूरी दुनिया में समाजवादी विचारों का तेजी से प्रसार हुआ वहां कई देशों में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। समाजवादी क्रांति को कुचलने के लिए बुर्जुआ वर्ग खासकर साम्राज्यवादी ताकतों ने रूस के गद्दार पूंजीपति व जमींदार वर्ग के सहयोग से हरचन्द कोशिश की। परन्तु जैसी बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में मजदूर वर्ग ने क्रांति से पूर्व और क्रांति के दौरान दृढ़ता का परिचय देते हुए सफलता अर्जित की वैसी ही दृढ़ता और बहादुरी उन्होंने क्रांति के बाद सर्वहारा सत्ता को बनाये रखने और समाजवाद के निर्माण के दौरान भी प्रदर्शित की। इस सबकी चर्चा अलग से (आगे के लेखों में) की जा रही है।

अंत में, महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय के प्रमुख कारणों की संक्षेप में चर्चा कर ली जाय। महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय के पांच प्रमुख कारण सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के अनुसार इस प्रकार रहे,

पहला, अक्टूबर क्रांति के निशाने पर रहा प्रमुख वर्ग पूंजीपति वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर, परनिर्भर था। राजनैतिक रूप से वह असंगठित और अनुभवहीन था। आम जनता में उसका आधार व प्रभाव नगण्य था। उसके पास ऐसी कोई पार्टी नहीं थी जो जनता को अपने पीछे लामबंद कर सके। इस वर्ग के नेताओं व पार्टियों की जनता के मध्य कोई साख नहीं थी।

फरवरी क्रांति में सत्ता इस वर्ग के हाथ में आने के बाद इसका चरित्र बहुत तेजी से मजदूरों, किसानों, सैनिकों व अन्य मेहनतकशों के सामने स्पष्ट हो गया। जारकालीन नीतियों व युद्ध को जारी रखने के इनके निर्णय ने और फिर युद्ध के मोर्चे पर मिली हर हार ने इन्हें जनता के निगाह में घोर घृणा का पात्र बना दिया। बाद के समय में समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविकों का खुला साथ भी इस वर्ग के पतन को नहीं रोक सका।

दूसरा, महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति का नेतृत्व रूस के मजदूर वर्ग ने किया। इस वर्ग के पास **1905-07** व फरवरी **1917** की क्रांतियों का अनुभव मौजूद था। एक असफल व एक सफल क्रांति ने इस वर्ग को अक्टूबर क्रांति के लिए वैचारिक, राजनैतिक, सांगठनिक, सैनिक हर दृष्टि से पर्याप्त ढंग से तैयार कर लिया था।

फरवरी क्रांति से अक्टूबर क्रांति के बीच के काल में रूस के मजदूर वर्ग ने अपनी पार्टी बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में सैनिकों, किसानों, अन्य मेहनतकशों सहित उत्पीड़ित जनगणों का भी विश्वास हासिल कर लिया था। युद्ध से मुक्ति यानी शांति की स्थापना की प्रमुख मांग हो अथवा जमीन की किसानों की मांग हो अथवा उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की बराबरी व आजादी की मांग हो, हर मामले में सुसंगत, वैज्ञानिक, न्यायसंगत व व्यावहारिक समाधान पेश कर के उसने साबित कर दिया था कि यह रूस के समाज को समग्र रूप से नेतृत्व दे सकता है।

तीसरा, मजदूर वर्ग व किसानों खासकर गरीब किसानों की एकता व मैत्री ने अक्टूबर क्रांति की विजय को संभव बनाया। फरवरी क्रांति के बाद के आठ माहों के अनुभव ने किसानों के सामने एकदम स्पष्ट कर दिया कि शांति और जमीन की उनकी मांग को मजदूर वर्ग की पार्टी ही पूरा कर सकती है। कैडेट पार्टी, समाजवादी-क्रांतिकारी, मेंशेविकों के आचरण ने उन्हें बोल्शेविकों के पक्ष में लगातार ला खड़ा किया। गरीब किसान बोल्शेविकों के साथ शीघ्र ही आ गये थे हालांकि मध्यम किसान बहुत दिनों तक ढुलमुल रहे। वे अक्टूबर क्रांति के ठीक पहले ही समाजवादी क्रांति के पक्ष में आये।

चौथा, महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति की विजय मजदूर वर्ग की पार्टी बोल्शेविक पार्टी के कुशल नेतृत्व में हुई थी। बोल्शेविक पार्टी ने मजदूर वर्ग की विजय को सम्भव बनाया था। बोल्शेविक पार्टी राजनैतिक संघर्षों में तपी और परखी हुयी थी। उसके पास क्रांति की हर मंजिल में मजदूर वर्ग को नेतृत्व देने के लिए आवश्यक तैयारी थी। कानूनी-गैरकानूनी, खुले-छिपे, शान्तिमय-गैर शान्तिमय काल के अनुसार अपने आपको ढालने और सर्वहारा वर्ग को सही नेतृत्व व दिशा देने का अनुभव था। उसके पास निर्णायक हमले के समय आवश्यक साहस व जनता को नेतृत्व देने की क्षमता थी। उसके पास देश में मौजूद विभिन्न क्रांतिकारी आंदोलनों को एक शक्तिशाली सामान्य क्रांतिकारी आंदोलन में मिलाने की सही नीति थी।

पांचवां, अक्टूबर क्रांति एक ऐसे समय में हुयी जब पहला विश्व युद्ध जारी था। साम्राज्यवादी देश एक दूसरे पर हमले कर रहे थे। वे ऐसी स्थिति में नहीं थे कि वे 'रूसी मामलों' में दखल दे सकें और क्रांति को विकसित होने से रोक सकें। साम्राज्यवादी युद्ध ने अक्टूबर क्रांति की विजय में एक प्रमुख कारक का काम किया था।

■■■